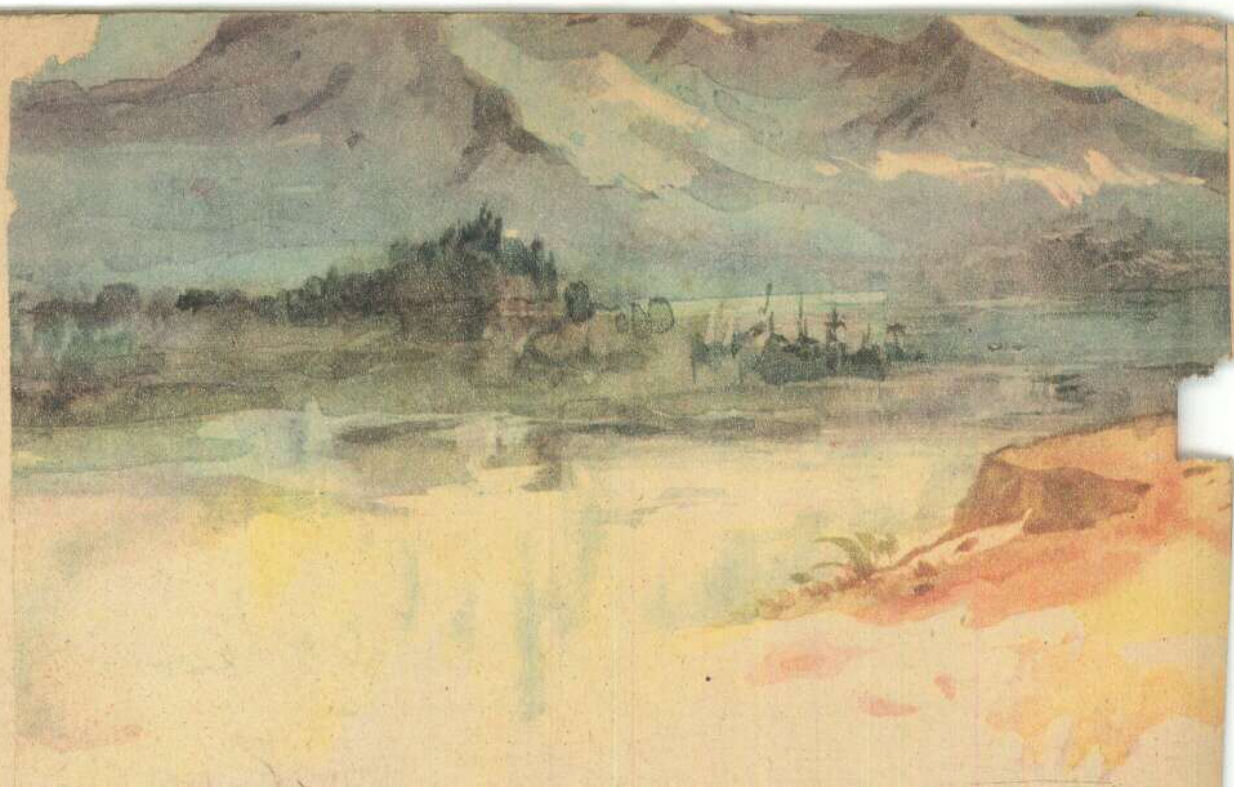

कहानी

केसर की क्यारी

—शीला इंद्र

नन्ही केसर काश्मीरके उस छोटेसे गांवमें रहती थी, जिसकी सीमा पाकिस्तानकी सीमाको छूती थी।

एक बार जब बहुत दिनों बाद केसरका मामा पहलगामसे आया था, तो सेब, खुबानी और अखरोटोंके साथ वह केसरके लिए एक छोटी-सी सफेद मुर्गी भी लाया था। ... उसके साथ एक लाल कलगीवाला सुनहला मुर्गा और एक काला सफेद-मेमना भी था।

केसर तो खुशीसे पागल हो गई थी। उसकी समझमें ही नहीं आया था कि इन दो छोटे छोटे हाथोंसे उन तीन नन्हे जीवोंको कैसे समेटे।

मुर्गीका दड़बा घरके अंदर ही बना था, मेमनेके लिए वहीं छोटा-सा बाड़ा भी बना।

पांच प्राणियोंका यह छोटा-सा परिवार मस्त-मगन था।

किंतु पाकिस्तानी घुसपैठियोंका उपद्रव भी चलता रहता था। एक दिन पता चला कि पाकिस्तानियोंकी दुष्टतासे तंग आकर युद्ध घोषित कर दिया गया है।

उसी दिन गांवमें भारतीय सेनाका ऐलान हुआ कि जो लोग चाहें, गांव छोड़कर अपने रिश्तेदारोंके पास किसी दूर गांव चले जाएं। जहां तक हो सके औरतें और बच्चे तो गांव छोड़ ही दें।

बहुतसे बूढ़े, औरतें और बच्चे गांव छोड़ कर चल दिए—युद्धके डरसे नहीं, बल्कि अपने वीर जवानोंकी सुविधाके विचारसे।

नन्ही केसर जब मांके साथ सामान ठीक करने लगी, तो सबसे पहले उसे अपने तीनों साथियोंकी चिंता हुई। उसका नन्हा मेमना, जो उसके साथ छायाकी तरह रहता है, सुनहला लाल कलगीवाला मुर्गा, जो रोज सुबह बांग देकर उसे सूरजकी पहली किरणके साथ उठा देता है, जिससे उसका सारा ही दिन बड़ा सुनहला बीतता है, और वह रुईके गालों जैसी नरम

सफेद मुर्गी, जो रोज सुबह एक बड़ा-सा अंडा देती है जिनको हर मंगलवारको बाजारके दिन बेचकर केसर अपने लिए न जाने कितनी चीजें खरीद लेती है। मीठे लेमनजूस लेना, तो वह कभी भी नहीं भूलती—ऐसे वफादार और प्यारे साथियोंको छोड़कर वह जा ही कैसे सकती थी?

और वह सब कुछ छोड़-छाड़कर उन तीनोंको समेटने भागी। पर न जाने क्यों उस दिन उन तीनोंपर कितनी मस्ती छाई थी कि वे नन्ही केसरके साथ खेलनेके मूडमें आ गए। मुर्गा उड़कर पेड़पर बैठ गया। जब वह मुर्गीकी ओर भागी, तो वह दालानकी ऊंची दीवारपर जा बैठी।

केसरके हाथ तो वहां सदियों तक भी न जा सकते थे। परेशान-सी वह मेमनेको पकड़ने लगी, तो वह दौड़कर एक गलीमें ऐसा गायब हुआ कि केसरको ढूंढ़े न मिला।

निराश होकर केसर रोने लगी।

बहुतसे लोग जा चुके थे। केसरकी मां भी रोती हुई केसरको जबरन ले गई।

•

भारतीय जवानोंकी सेना गांव गांव फैलती चली गई। 'धड़ड़-धड़ड़ धांय-धांय' भारतीय बंदूकें और तोप-गोले छूटते और पाकिस्तानी पैटन टैंक और सेबर जेट विमान फूटे ढोलकी तरह फिस्स करके रह जाते।

जिस घरमें केसर रहती थी, उस घरमें एक छोटी-सी चौकी बन गई थी। वहीं उन जवानोंका भोजन भी बनता।

पहली ही रात जब कुछ जवान वहां आराम कर रहे थे, तो केसरके तीनों नन्हे साथी घर लौटकर आए, पर वहां केसर नहीं थी। तीनों बड़े परेशान, बड़े दुखी हुए।

उन जवानोंने देखा, तो समझ गए कि ये तीनों इसी घरके सदस्य हैं। अतः युद्ध करनेके साथ साथ उन्होंने अपना यह कर्त्तव्य भी मान लिया कि उनकी भी रक्षा करें, इसलिए तीनोंको दाना-पानी देकर उनके दड़बोंमें बंद कर दिया गया।

उधर केसर अपने साथियोंकी चिताके साथ एक चिता और साथ ले गई कि मां तो इधर आ गई, अब उन लड़ने वाले जवानोंको खाना कौन देगा पका कर! जब यह बात मांसे कही गई, तो वह भी सचमुच परेशान हो उठी—घर छोड़कर नहीं आना था, कमसे कम ढंगसे खाना पकाकर तो द सकती थी उन देशपर मरने वाले जवानों को। ज्यादासे ज्यादा यही तो होता कि एकाध गोली खाकर वह भी मर जाती, पर वे बेचारे भूखे तो न रहते।

पर अब हो भी क्या सकता था। लड़ाई भयंकर होती जा रही थी। शामको सात बजेसे गलियां सूनी हो जातीं। एसा घुप्प अंधेरा कि एक जुगनूकी चमक भी कहीं न दीखती।

लड़ने वाले जवानोंमें एक था अब्दुल, जो केसरके साथियोंकी चिता, जब भी अवकाश मिलता तब, कर लेता या अपने साथियोंसे उनका काम करनेको कह जाता था।

लगभग डेढ़ माहके घमासान युद्धके बाद युद्ध-विराम हो गया। अब तक भारतीय जवान केसरके गांवसे बहुत आगे बढ़ गए थे, क्योंकि उन्होंने बहुत-सा पाकिस्तानी इलाका जीत लिया था।

अब लोग गांव लौटकर आने लगे। केसर और उसकी मां भी लौट आईं। जब वे लोग गांवका पैदल रास्ता तय कर रहे थे, तो उन लोगोंने बहुतसे पाकिस्तानियोंको हाथ बांधे, सिर झुकाए कुछ भारतीय जवानोंके पहरेमें जाते देखा।

सीधी-सादी केसरके खूनमें न जाने कैसे रणचंडी समा गई कि एक भारी-सा पत्थर उठाकर वह उन पाकिस्तानियोंको मारने दौड़ी। पत्थर शायद किसीको लग जाता कि एक जवानने उसका हाथ थाम लिया और उसे दुलराते हुए बोला—"देखो, बेटी, निहत्थोंपर बहादुर लोग वार नहीं करते। वे हमारी शरणमें आ गए हैं, उन्हें मारने से पाप लगेगा, हां . . .पत्थर फेंक दो और घर जाओ।"

बड़ी लज्जित हो उठी केसर। उसने पत्थर फेंक दिया और नीचा सिर किए आगे बढ़ गई।

न जाने क्यों उसे एकदम अपने तीनों साथियों की याद बड़ी जोरोंसे सताने लगी। अब तो क्या मिलेंगे वे? दुःखके मारे उसे रुलाई आने लगी।

•

मां-बेटी जब गांव पहुंचीं, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। पूरा गांव साफ-सुथरा पड़ा था। बूढ़े कासिमकी भेड़ें, जिनकी मौतका फातिहा वह दूर गांवमें बैठे बैठे पढ़ा करता था, अपने बाड़े में मिमिया रही थीं। आमीनकी बत्तखें सारे में 'कें-कें' करती जैसे अमन-चैनका डंका पीट रही थीं। सब कुछ वैसा ही था, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

दौड़ती-भागती केसर हांफती हांफती अपने घर पहुंची। आशाकी एक नन्ही किरण, जो गांवमें घुसनेपर उसके मनमें समा गई थी, अब सुनहली धूप बनकर उसके तन-मनको जगर-मगर कर रही थी।

उसके तीनों साथी जैसे उसके स्वागतमें

अटेंशन खड़े थे! पर केस
कायदा न पहचानकर उन
लिया। वह रोती जाती औ
फेरती जाती।

मेमना कितना बड़ा ह
भी बड़ी हो गई थी, क्योंकि
की मां हो गई थी। इतने प
सफेद सफेद, सुनहले सुनहले
वाह, केसर तो राजा हो गई

पानीके बड़े बर्तनमें प
सब कुछ साफ-सुथरा ज्यों
कुछ उखाड़-पछाड़, टूट-फूट
आश्चर्यमें डालने वाली जो
चिट्ठी, एक बिस्कुटका डि
और लेमनजूसका पैकेट।
चीजें!

सबसे पहले उसने चिट
अटक अटक कर :

प्यारी नन्ही केसर,

अच्छा बताओ, ह
मालूम हुआ। हमें किसी अ
तुम्हारी मुर्गी-मुर्गे और मेमने

तुम्हारे लिए कुछ भेंटें
खाना। हम तुम्हारी मुर्गीके
सके जिसका हिसाब तुम्हारी
अधिक दिनोंमें वे खराब ह
को हमने उन्हें मुर्गीके पास
कुछको इस्तेमाल कर लिया
से तुम्हारी गुल्लकमें डाल
तुम उन छोटे छोटे बच्च
खुश होगी।

एक बात और। अब्दुल
जो तुम्हारे इन नन्हे साथि
ध्यान रखता था, लड़ाईमें
बहुत वीर था वह, आखि
बरसाता रहा दुश्मन पर।
हमेशा हमेशा।

कसा अद्भुत संयोग थ
नाम भी अब्दुल था। वह भी

केसर की आंखोंमें आंसू

अटेंशन खड़े थे! पर केसरने उनका फौजी कायदा न पहचानकर उनको सीनेसे चिपटा लिया। वह रोती जाती और उनके ऊपर हाथ फेरती जाती।

मेमना कितना बड़ा हो गया था। मुर्गी भी बड़ी हो गई थी, क्योंकि वह अब बहुतसे बच्चों की मां हो गई थी। इतने प्यारे प्यारे छोटे छोटे, सफेद सफेद, सुनहले सुनहले, लाल लाल बच्चे! वाह, केसर तो राजा हो गई!

पानीके बड़े बर्तनमें पानी भरा रखा था। सब कुछ साफ-सुथरा ज्यों का त्यों था, कहीं भी कुछ उखाड़-पछाड़, टूट-फूट न थी। पर सबसे आश्चर्यमें डालने वाली जो चीज थी, वह थी एक चिट्ठी, एक बिस्कुटका डिब्बा और एक मेवों और लेमनज़सका पैकेट। वाह, इतनी सारी चीजें!

सबसे पहले उसने चिट्ठी पढ़ी। धीरे धीरे अटक अटक कर :

प्यारी नन्ही केसर,

अच्छा बताओ, हमें तुम्हारा नाम कैसे मालूम हुआ। हमें किसी आदमीने नहीं बताया। तुम्हारी मुर्गी-मुर्गे और मेमनेने भी नहीं बताया...

तुम्हारे लिए कुछ भेंटें हैं। सबको बांटकर खाना। हम तुम्हारी मुर्गीके अंडे जमा नहीं कर सके जिसका हिसाब तुम्हारी कापीमें है। क्योंकि अधिक दिनोंमें वे खराब हो जाते इसलिए कुछ को हमने उन्हें मुर्गीके पास ही छोड़ दिया और कुछको इस्तेमाल कर लिया। उनके पैसे अलग से तुम्हारी गुल्लकमें डाल दिए हैं। उम्मीद है तुम उन छोटे छोटे बच्चोंको देखकर बहुत खुश होगी।

एक बात और। अब्दुल नामका वह सिपाही जो तुम्हारे इन नन्हे साथियोंका सबसे अधिक ध्यान रखता था, लड़ाईमें शहीद हो गया। बहुत वीर था वह, आखिर दम तक गोली बरसाता रहा दुश्मन पर। उसको याद रखना हमेशा हमेशा।

तुम्हारा भाई,
एक जवान

कसा अद्भुत संयोग था, केसरके बापका नाम भी अब्दुल था। वह भी बहुत वीर था। . . .

केसर की आंखोंमें आंसू आ गए। ●

छिप गया कहीं सूरज!

दुख में डूबी कलियां,
रोता गुलाब का मन,
पागल हो रही हवा,
लुट गया भरा उपवन!

अब फूल नहीं खिलते,
तुम जब से चले गए!
उस ताशकंद में हम
घर बैठे छले गए!

तुम हम से दूर गए,
विश्वास न होता है!
लेकिन हम सब का मन,
अंदर से रोता है!

आंखों में नीर लिये,
दुख में डूबे मुखड़े!
गलियों, चौराहों पर,
हर ओर उदास खड़े!

छिप गया कहीं सूरज,
गुमसुम है उजियारा!
हर ओर बरसता है–
मातम का अंधियारा!

पर, मां, उदास मत हो,
नन्हे जवान हैं हम!
ऊंचा लहराएंगे–
आजादी का परचम!

चरणों पर चल चल कर
हम लाल बहादुर के,
दिखलाएंगे उनके
सपने पूरे करके!

सौगंध हमें, तब ही
हम वीर कहाएंगे!
तेरे यश का सूरज–
जब नया उगाएंगे!

—सीताराम गुप्त

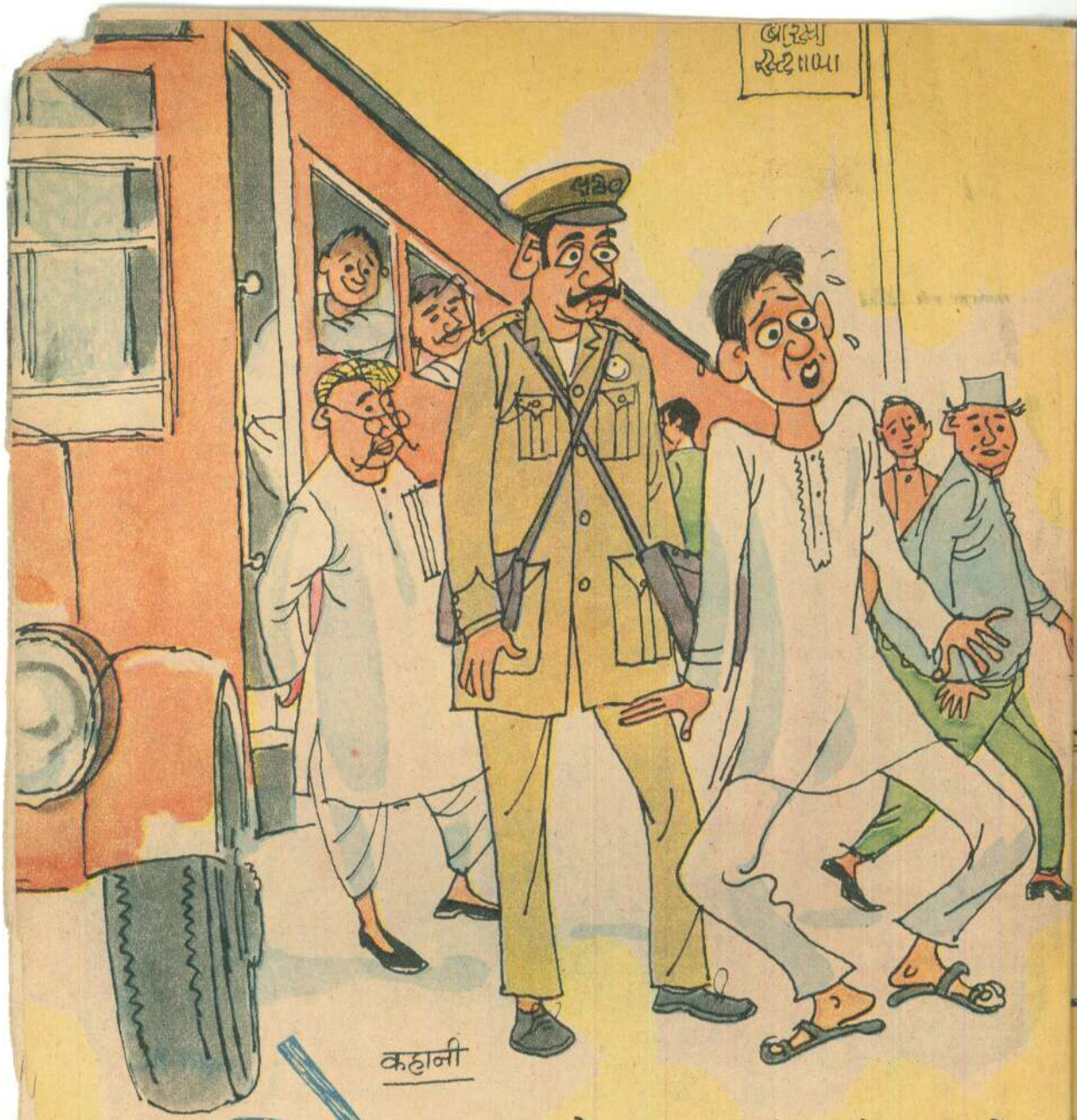

कहानी

भोला और वह

भोला पंद्रह सालका हो गया है। वह दसवीं कक्षामें पढ़ता है। पिछले दो-तीन सालसे वह कुछ अजीब-सी परेशानीमें फंसा रहता है। एक 'वह' है जो हमेशा उसके पीछे लगा रहता ह—सोते-जागते, उठते-बैठते हर समय। भोला जहां भी जाता है वह उसके साथ होता है। भोला जो काम करता है, वह उसके सामने खड़ा होता है। वह भोलाकी हर बातमें हस्तक्षेप करता है। इस कारण उसे कभी कभी बहुत झुंझलाहट होती है। कई बार भोला सोचता है कि उसकी बात नहीं मानेगा। वह ज्यादा बात करेगा, तो एक फटकार

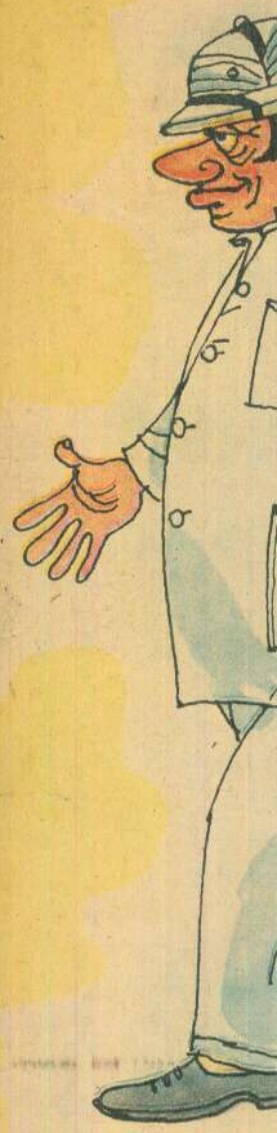

बताएगा। कई बार उ
भी है, पर 'वह' भी कम
कार सुनता है, तो कभी
है और कभी उससे भी
उसे ही सुना देता है।

अभी उस दिनकी ही
नानाके घरसे आ रहा थ
हैं। छुट्टियोंमें पूरे पंद्र
रहा था। चलनेको हुआ
मामा-मामीने उसे बहुत
उनमें उसके बहुतसे कप

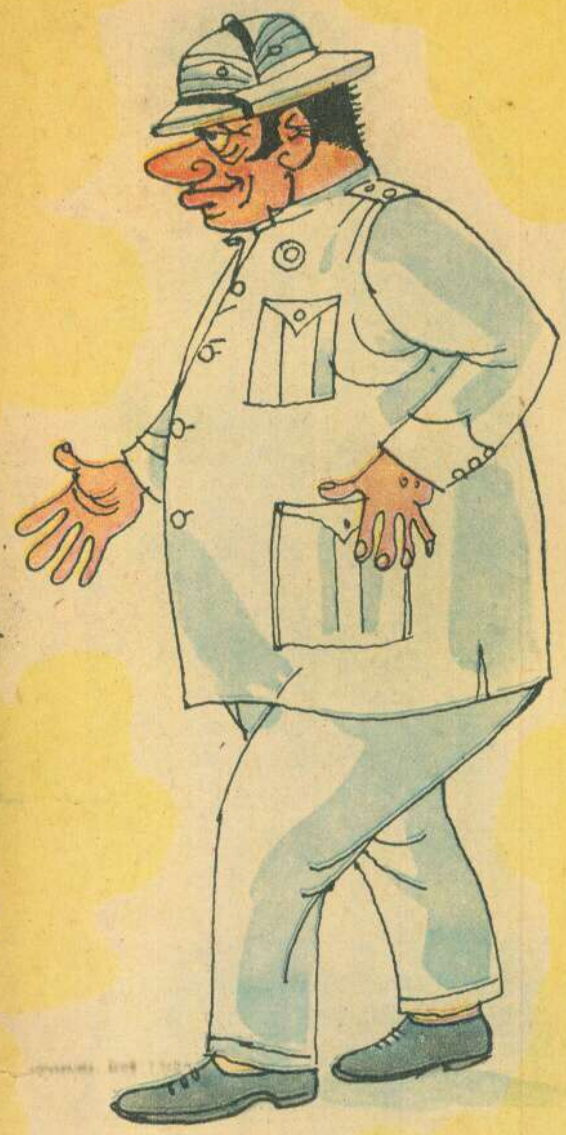

बताएगा । कई बार उसने उसे फटकार बताई भी है, पर 'वह' भी कम ढीठ नहीं । उसकी फटकार सुनता है, तो कभी तो बस मुस्करा भर देता है और कभी उससे भी ज्यादा तेज फटकार उल्टे उसे ही सुना देता है ।

अभी उस दिनकी ही बात है, जब वह अपने नानाके घरसे आ रहा था । नाना अलीगढ़में रहते हैं । छुट्टियोंमें पूरे पंद्रह दिन वह उनके पास रहा था । चलनेको हुआ, तो नाना-नानीने और मामा-मामीने उसे बहुत सारी चीजें दी थीं । उनमें उसके बहुतसे कपड़े थे, खाने-पीनेकी चीजें थीं, देशी घीका एक छोटा पीपा था । छुट्टियोंमें वह अपने पढ़नेकी किताबें भी अलीगढ़ ले गया था । वे भी उसके साथ थीं । दिल्ली स्टेशनपर उतरा, तो सामानकी चेकिंग हो गई । चेकिंग करने वाला बाबू बोला—"सामान तो ज्यादा है ।"

उसे भी लगा कि सामान तो ज्यादा है । अलीगढ़ स्टेशनपर बुक करा लेता, तो अच्छा रहता । अब क्या करे? कुलीने इशारा किया—'बाबूको एक-आध रुपया दे दो . . . बस ।' उसे लगा, हां यह बात तो आसान है । कौन ज्यादा झंझट पाले?

भोला ऐसा सोच ही रहा था कि 'वह' सामने आ खड़ा हुआ और बोला—'तुमने एक गलती तो की कि अलीगढ़में सामान बुक नहीं कराया । अब दूसरी कर रहे हो, जो अपनी इस गलतीको छिपानेके लिए बाबूको घूस देनेकी सोच रहे हो ।'

उसने खीझकर पूछा—'तो क्या करूं?'

'वह' बोला—'इसे पूरा चार्ज दे दो ।'

—महीपसिंह—

भोलाको गुस्सा तो जरूर आया, पर 'वह' के सामने उसकी ज्यादा चलती नहीं है । उसने सामान तुलवाया और पूरा चार्ज दे दिया ।

कुली उसे बार बार इशारा कर रहा था कि तुम्हारा काम कममें बन सकता है । पर भोला उसे कैसे समझाता कि उसके सिरपर कौन चढ़ा है, जो उसे बार बार कह रहा है कि गलती की है, तो दंड भरो । दंडसे भागो नहीं, उसे स्वीकार करो ।

•

भोला बससे लाल किलेकी तरफ चला जा रहा था । वह गुरुद्वारा रोडसे चढ़ा था । बसमें भीड़ बहुत थी । हर स्टापपर जितनी सवारियां उतरती थीं, उससे ज्यादा चढ़ जाती थीं । कंडक्टर कुछको टिकट देता, फिर भागकर पीछे आता । उतरती हुई सवारियोंके टिकट देखता और चढ़ने वाली भीड़के रेलेको रोकनेकी कोशिश करता । भोला बिल्कुल ड्राइवरके पीछे बैठा था । बस दरियागंजसे निकल रही थी और अभी तक उसे

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

एक नन्हे बालक का कपड़े पहनना सीखना उसके युवा होने का प्रमाण है। आप उसे स्वावलम्बी बनना सिखाकर शक्तिशाली बनाते हैं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया। आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें— उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

P. 10

मुफ्त! "दाँतों और मसूढों की रक्षा" संबंधी रंगीन पुस्तिका

यह पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में मिलती है। इसे मँगवाने के लिए १० पैसा के टिकट (डाक खर्च के वास्ते) इस पते पर भेजिए: मॅनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बेग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम: _____

पता: _____

भाषा: _____

कंडक्टरने टिकट नहीं
स्टाप आने ही वाला थ
पुथल होने लगी। उसने
लाल किला आ जाएगा
से नीचे उतर जाएगा।

भोला कंडक्टरकी न
उससे कह रहा था—
यह कहां तक याद रख
लिया है, किसने नहीं।
टिकट मांग लो।'

'वह' बार बार कह
टाल रहा था। भोला
साइन बोर्डोंको पढ़ने लग
हुए आदमियों-औरतोंक
सिनेमाके पोस्टरोंपर अ
इस चालबाजीको समझ
रहा था।

बस एडवर्ड पार्कका
गई। लाल किलेपर
अपनी अपनी सीटोंसे उ
उठ खड़ा हुआ। कंडक
एक एकसे पूछ रहा था
या नहीं। जिन्होंने लि
आगे बढ़ रहे थे; जिन्होंने
देकर टिकट ले रहे थे।
'वह' उसे खींचकर बोल
भोला तो आज उसकी
फैसला कर चुका था।
कंडक्टरके पाससे गुज
गर्दन हिला दी जैसे टिक
झटपट पायदानकी सीढ़ि
गया।

भोला जब तक पायद
था, उसे घबराहट थी।
यदि कंडक्टरने टिकट
क्या होगा? पर जब वह
पर आ गया, तो उसकी ज
पैसे बचा लेनेकी खुशी उ

पर दूसरे ही क्षण
कौन खड़ा था? कोई
वर्दी पहने था। उसने
टिकट?"

भोलाने हड़बड़ाकर

कंडक्टरने टिकट नहीं दिया था। लाल किलेका स्टाप आने ही वाला था। भोलाके मनमें उथल-पुथल होने लगी। उसने सोचा, एक स्टापके बाद लाल किला आ जाएगा। भीड़में वह भी आसानी-से नीचे उतर जाएगा। पच्चीस पैसे बच जाएंगे।

भोला कंडक्टरकी नजर बचाने लगा। 'वह' उससे कह रहा था—'इतनी भीड़में कंडक्टर यह कहां तक याद रख सकता है कि किसने टिकट लिया है, किसने नहीं। तुम खुद आगे बढ़ कर टिकट मांग लो।'

'वह' बार बार कह रहा था और भोला उसे टाल रहा था। भोला कभी सड़कपर लगे हुए साइन बोर्डोंको पढ़ने लगता, कभी सड़कपर चलते हुए आदमियों-औरतोंको देखने लगता, कभी सिनेमाके पोस्टरोंपर आंखें गड़ाता। 'वह' उसकी इस चालबाजीको समझ रहा था और मुस्करा रहा था।

बस एडवर्ड पार्कका स्टाप छोड़कर आगे बढ़ गई। लाल किलेपर उतरने वाली सवारियां अपनी अपनी सीटोंसे उठने लगीं। भोला भी उठ खड़ा हुआ। कंडक्टर दरवाजेके पास खड़ा एक एकसे पूछ रहा था कि उसने टिकट लिया है या नहीं। जिन्होंने लिया था वे गर्दन हिलाकर आगे बढ़ रहे थे; जिन्होंने नहीं लिया था, वे पैसे देकर टिकट ले रहे थे। भोलाका नंबर आया, तो 'वह' उसे खींचकर बोला—'टिकट ले लो।' पर भोला तो आज उसकी बात न माननेका जैसे फैसला कर चुका था। उसने उसे झटक दिया। कंडक्टरके पाससे गुजरते हुए उसने इस तरह गर्दन हिला दी जैसे टिकट ले ही लिया हो और झटपट पायदानकी सीढ़ियां उतरकर नीचे आ गया।

भोला जब तक पायदानकी सीढ़ियां नहीं उतरा था, उसे घबराहट थी। उसे डर लग रहा था कि यदि कंडक्टरने टिकट दिखानेको कहा, तो क्या होगा? पर जब वह सीढ़ियां उतरकर सड़क पर आ गया, तो उसकी जानमें जान आई। पच्चीस पैसे बचा लेनेकी खुशी उसके चेहरेपर छा गई।

पर दूसरे ही क्षण . . .अरे यह उसके सामने कौन खड़ा था? कोई आदमी था, जो सफेद वर्दी पहने था। उसने भोलासे पूछा—"तुम्हारा टिकट?"

भोलाने हड़बड़ाकर उसकी तरफ देखा। वह आदमी बसके टिकटकी चेकिंग करने वाला इंस्पेक्टर था।

भोलाको जल्दीमें कुछ नहीं सूझा कि वह क्या जवाब दे। दिन तो सर्दीके थे, पर उसके मुंहपर पसीना झलक आया।

इंस्पेक्टरने फिर पूछा—"तुम्हारा टिकट?"

"टिकट . . . टिकट तो कहीं गिर गया!" उसने जल्दीसे झूठ बोल दिया।

उसकी बात सुनकर इंस्पेक्टर मुस्कराया। उसने डांटकर पूछा—"सच बताओ, तुमने टिकट लिया था?"

भोला चुप था।

"कहांसे आ रहे हो?" उसने पूछा।

"गुरुद्वारा रोडसे," भोला बोला।

"चलो, पच्चीस पैसे निकालो। और खबर-दार जो फिर कभी बिना टिकट लिये बसपर चढ़े।"

इंस्पेक्टरने कंडक्टरको बुलाकर भोलाको पच्चीस पैसेका टिकट दिलाया।

भोला चला जा रहा था और 'वह' उससे कह रहा था—'देखा, पच्चीस पैसे बचानेका नतीजा? क्या यह अच्छी बात है? इंस्पेक्टरके सामने तुम्हें कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ी। कितने लोग तुम्हारी तरफ देख रहे थे, तुम्हें चोर समझ रहे थे। तुम सोचो, अगर सभी लोग इस तरह टिकटकी चोरी करने लगें, तो बसें चलें कैसे। और अगर बसें चलना बंद हो जाएं, तो सोचो हजारों आदमियोंको कितनी तकलीफ होगी।'

भोला उसकी बातें सुन रहा था। आज भोला अपने आपको उसके सामने बहुत छोटा महसूस कर रहा था।

●

एक दिन भोला कनाट प्लेससे पैदल ही जा रहा था कि उसने वहां एक बड़ी अजीब बात देखी। एक फुटपाथपर कुछ पत्रिकाएं और अखबार फैले हुए थे और उनके ऊपर एक हाथका लिखा बोर्ड रखा हुआ था, जिसपर लिखा था—

'अपनी मनपसंद पत्रिका या अखबार ले लीजिए और पैसे इस संदकचीमें डाल दीजिए।'

पासमें ही एक संदूकची रखी थी। उसपर कोई ताला भी नहीं लगा था।

भोलाको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने इधर-

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

१९६५ में प्रकाशित डाक-टिकट

• गजराज जैन

मेरे बाल साथियो, एक वर्ष और बीत गया और इसके साथ ही मेरी टिकट संग्रह-पुस्तिका का एक पन्ना और भर गया। उसीका वह पन्ना यहां तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूं जिसमें भारतीय डाक-तार विभाग द्वारा १९६५ में प्रकाशित १७ नए डाक टिकट लगे हुए हैं। जिन महापुरुषों या अवसरोंकी यादमें ये टिकट निकाले गए, उनका विवरण इस प्रकार है :

(१) इस वर्षका सबसे पहला टिकट भारत के महान् उद्योगपति स्वर्गीय जमशेदजी टाटाकी १२५ वीं वर्षगांठके अवसरपर ९ जनवरीको निकाला गया। यह टिकट गहरे भूरे और नारंगी रंगका है जिसपर टाटाका चित्र अंकित है। जमशेदजीका जन्म बड़ौदाके एक प्रसिद्ध पारसी-पुरोहित परिवारमें सन् १८३९ में हुआ था। बम्बईके प्रसिद्ध एलफिंस्टन कालेजमें शिक्षा पूरी कर वह अपने पिता नौशेरवांजीके व्यापार में हाथ बंटाने लगे। जमशेदजीने अपने जीवन-कालमें अनेक औद्योगिक संस्थाओं और शिक्षण संस्थाओंकी नींव डाली जिनमें जमशेदपुर स्थित टाटा लोह व इस्पात उद्योग, बम्बईकी टाटा जल-विद्युत कम्पनी तथा बंगलोरका भारतीय वैज्ञानिक संस्थान विख्यात है। बम्बईका सुप्रसिद्ध ताजमहल होटल भी जमशेदजीने ही बनवाया था। इस अथक परिश्रमी और उद्योगशील महापुरुषकी मृत्यु सन् १९०४ में हुई (चित्र-१६)।

(२) पंजाब केसरी लाला लाजपतरायकी जन्म शताब्दीके अवसरपर दिनांक २८ जनवरी को एक गहरे भूरे रंगका टिकट निकाला गया, जिसपर लालाजीका चित्र अंकित है। लाला लाजपतरायका जन्म १८ जनवरी १८६५ को अपनी ननिहाल ढोड़ी ग्राम (पंजाब) में हुआ। आपके पिताका नाम राधाकिशन था। अपनी शिक्षा पूरी करनेके पश्चात् आप कुछ समयके लिए वकील और शिक्षक रहे। आपने समाज-सेवाके अनेक कार्य किए, जिनमें शिक्षा-संस्थाओं और अनाथालयोंकी स्थापना, अछूतोद्धार और स्वदेशी आंदोलन प्रमुख हैं। आप आर्यसमाज, हिन्दू महासभा और कांग्रेसके सक्रिय कार्यकर्ता रहे, इसलिए १९२० में कांग्रेस और १९२५ में हिन्दू महासभाके कलकत्ता अधिवेशनोंके अध्यक्ष बनाए गए। भारतकी स्वतंत्रताके लिए आपने इंग्लैंड, अमरीका, जापान आदि देशोंमें भी कार्य किया। पंजाबमें सायमन कमीशनके विरुद्ध प्रदर्शनमें आप पुलिसकी लाठियोंसे घायल हो गए, जिससे कुछ दिनों पश्चात् १७ नवंबर १९२८ को लाहोरमें आपका देहांत हो गया (चित्र-७)।

(३) इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य संघका २० वां अधिवेशन नई दिल्लीके विज्ञान भवनमें प्रसिद्ध उद्योगपति डा. भरतरामकी अध्यक्षतामें हुआ, जिसमें ४५ देशोंके एक हजारसे अधिक प्रतिनिधियोंने भाग लिया। इस अवसरपर दिनांक ८ फरवरीको जैतूनी हरे रंगका विशेष टिकट निकाला गया, जिस पर विश्वका मानचित्र और लाल अक्षरोंमें आई. सी. आई. अंकित है (चित्र–१७)।

(४) द्वितीय राष्ट्रीय नौवहन दिवस के अवसरपर ५ अप्रैलको गहरे नीले रंगका टिकट निकाला गया। इसपर भारतमें बने सर्वप्रथम जहाज 'जल उषा' को विशाखापत्तनम् बंदरगाहमें खड़ा दिखाया गया है। यह जहाज १९४८ में बनकर तैयार हुआ था। अबतक भारतमें ऐसे २७ जहाज बनाए जा चुके हैं (चित्र–१२)।

(५) अमेरिकामें गुलामी-प्रथा को समाप्त करने वाले राष्ट्रपति अब्राहम लिंकनकी मृत्यु-शताब्दी के अवसरपर १५ अप्रैलको पीले और बैंगनी लाल रंगका टिकट निकाला गया, जिसपर लिंकनका चित्र अंकित है। लिंकनका जन्म १२ फर-

वरी १८०८ को एक ग
हुआ था। उनके पिताक
माताका नाम नेन्सी हैंक
मेरी टॉड था। बचपनसे
अपनी प्रतिभाके बलपर स
के राष्ट्रपति बने। अपने
पहली जनवरी १८६३ क
४० लाख गुलामोंको मुक
लिए लिंकनको भीषण गृह
पड़ा। विद्रोहियोंकी पूर्ण
१४ अप्रैल १८६५ को नाट
घरमें उनको गोली मार
दिन सुबह उनका देहांत हो
(६) अंतर्राष्ट्रीय दूर-

वरी १८०८ को एक गरीब किसान परिवारमें हुआ था। उनके पिताका नाम टामस लिंकन, माताका नाम नेन्सी हैंक्स और पत्नीका नाम मेरी टॉड था। बचपनसे ही परिश्रमी लिंकन अपनी प्रतिभाके बलपर सन् १८६० में अमेरिका के राष्ट्रपति बने। अपने एक घोषणा-पत्र द्वारा पहली जनवरी १८६३ को लिंकनने अमेरिकाके ४० लाख गुलामोंको मुक्त कर दिया। इसके लिए लिंकनको भीषण गृह-युद्धका सामना करना पड़ा। विद्रोहियोंकी पूर्ण पराजयके ५ वें दिन १४ अप्रैल १८६५ को नाटक देखते समय नाटक-घरमें उनको गोली मार दी गई, जिससे दूसरे दिन सुबह उनका देहांत हो गया (चित्र–८)।

(६) अंतर्राष्ट्रीय दूर-संचार संघकी शताब्दी के अवसरपर १७ मईको लाल बैंगनी रंगका टिकट निकाला गया, जिसपर दूर-संचार साधनोंकी ध्वनि तरंगोंके चित्र हैं। इस संघकी स्थापना सौ वर्ष पूर्व १७ मई १८६५ को हुई थी। उस समय २० यूरोपीय देश इसके सदस्य थे। भारत सन् १८६९ में इसका सदस्य बना। इस संघका पहला अधिवेशन सन १९०६ में बर्लिनमें हुआ था। १९४७ में इसे संयुक्त राष्ट्र संघकी एक विशेष एजेंसी बना दिया गया। इस समय इसके १२८ सदस्य हैं। इस संस्थाका प्रमुख कार्य टेलीग्राफ, टेलीफोन, रेडियो, संचार उपग्रह आदिसे संबंधित अंतर्राष्ट्रीय नियम तैयार करना है (चित्र–१४)।

(७) स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरूकी

प्रथम वर्षीपर २७ मईको नीले और लाल रंग वाला एक दुरंगा टिकट प्रकाशित किया गया, जिस पर जवाहर-ज्योति और गुलाबके फूलका चित्र है। नेहरूजीके मृत्यु-दिवसपर जलाई गई यह ज्योति देशके विभिन्न भागोंका दौरा कर ठीक एक वर्ष बाद इसी दिन राजधानी वापस पहुंची थी (चित्र–५)।

(८) संयुक्त राष्ट्र संघकी ओरसे १९६५ का वर्ष संसार भरमें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष के रूपमें मनाया गया। इस उपलक्ष्यमें २६ जून को हल्के भूरे रंगका टिकट निकाला गया जिसपर गहरे हरे रंगमें संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित, टहनियोंके मध्य दो मिले हुए हाथोंका चित्र है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना बढ़ाने के लिए ऐसा वर्ष मनानेकी प्रेरणा संयुक्त राष्ट्र संघकी महासभामें स्वर्गीय पं. नेहरूने १० नवंबर १९६१ को अपने एक भाषण द्वारा दी थी (चित्र–१५)।

(९) भारतीय पर्वतारोही दलकी अभूतपूर्व एवरेस्ट विजयपर १५ अगस्तको लाल बैंगनी रंगका टिकट निकाला गया, जिसपर तिरंगा झंडा लिए दो पर्वतारोहियोंका चित्र है। १९६० और १९६२ के दो असफल अभियानोंके बाद यह भारतीय दलका प्रथम सफल अभियान था, जिसमें इस दलके १९ सदस्योंमेंसे ९ ने संसारके इस सर्वोच्च शिखरपर चढ़नेमें सफलता पाई। इनमेंसे कप्तान ए. एस. चीमा तथा नवांग गोम्बू २० मईको, सोनाम ग्यात्सो तथा सोनाम वांग्याल २२ मईको, सी. पी. वोहरा और अंगकामी २४ मईको और कप्तान एम. एस. आहलूवालिया, एच. सी. एस. रावत तथा सरदार फूदोरजी २९ मईको इस चोटीपर पहुंचे। भारतकी इस सफलतासे १९६३ के अमरीकी अभियान दलकी सफलताका रेकॉर्ड भंग हो गया, जिसमें उसके ६ सदस्य इस चोटीपर पहुंचे थे जिनमें नवांग गोम्बू भी एक थे। इस प्रकार नवांग गोम्बू को विश्वके इस सर्वोच्च शिखरपर दो बार पहुंचनेका गौरव प्राप्त है (चित्र–३)।

(१०) वर्तमान भारतके नक्शेवाली टिकट-मालाके स्थानपर शीघ्र ही एक नई टिकट माला शुरू होगी। इस नई टिकट मालाका १५ पैसे वाला टिकट १५ अगस्तको जारी किया गया। हरे रंगमें छपे इस टिकटपर चायकी पत्तियां चुनती हुई नारीका चित्र है।

(११) स्वर्गीय गोविंदवल्लभ पंतके ७८ वें जन्म-दिवसपर गहरे भूरे और हरे रंगका एक विशेष टिकट निकाला गया, जिसपर पंतजीका चित्र अंकित है। पंतजीका जन्म १० सितंबर १८८७ को अल्मोड़ा जिलेमें हुआ था। इलाहाबादमें उच्च शिक्षा पूरी कर आपने १९०७ में वकालत शुरू की। साथ ही आप राजनीतिमें भी सक्रिय भाग लेने लगे। आप अनेक बार उत्तर प्रदेशकी विधान सभाके सदस्य और यू. पी कांग्रेस दलके नेता चुने गए। पहली अप्रैल १९४६ से आप उत्तर प्रदेशके मुख्य मंत्री बने परंतु १९५५ में आपको केंद्रीय मंत्रिमंडलमें गृहमंत्री बना दिया गया। इसी पदपर कार्य करते हुए आपका देहांत ७ मार्च १९६१ को दिल्लीमें हुआ (चित्र–१०)।

(१२) सरदार वल्लभभाई पटेलकी ९० वीं जन्म-तिथिपर ३१ अक्तूबर ६५ को लौह रंगका टिकट निकाला गया, जिसपर स्वर्गीय पटेलका चित्र है। सरदार पटेलका जन्म १८७५ में गुजरातके खेड़ा जिलेके करमसद ग्राममें हुआ था। आपके पिताका नाम झवेरभाई और बड़े भाईका नाम विट्ठलभाई था। नड़ियाद और बड़ोदामें शिक्षा पूरी कर आपने इंग्लैंडसे बैरिस्टरी पास की, परंतु गांधीजीसे प्रभावित होकर आपने वकालत छोड़ दी और असहयोग आंदोलनमें कूद पड़े। १९२८ के बारडोली आंदोलन का सफल नेतृत्व करनेके कारण गांधीजीने आपको सरदारकी उपाधि दी। १९३१ में कांग्रेसके कराची अधिवेशनके आप अध्यक्ष बनाये गए। आजादीके बाद आप भारतके गृहमंत्री और उप प्रधान मंत्री बनाए गए। उस समय जिस कुशलता और दृढ़तासे आपने साम्प्रदायिक एकता और देशी रियासतोंको भारत संघमें मिलाकर राष्ट्रीय एकता कायम की, वह भारतवासी कभी न भूल सकेंगे। इस 'लौह पुरुष' का स्वर्गवास १५ दिसंबर १९५० को हुआ (चित्र–४)।

(१३) देश-सेवा में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले देशबंधु चितरंजनदासके ९५ वें जन्म-दिवसके अवसरपर ५ नवंबरको गहरे भूरे रंगका एक विशेष टिकट निकाला गया। स्वर्गीय चितरंजनदासका जन्म सन १८७० में कलकत्ताके एक प्रगतिशील ब्रह्मसमाजी परिवारमें हुआ था।

१८९० में कलकत्त
ए. पासकर आपने
पास की। एक विख्या
आप एक कुशल राज
सफल संपादक भी
देश-सेवाके कारण आ
और १९२२ के गया
बनाए गए। असहयो
चलती हुई बैरिस्टरी
लिया और जेल गए।
लिंगमें इस महान देश
(चित्र–११)।

(१४) वर्तमान
जगह १४ नवंबरको
टिकट निकाला गया
और हरा है। इस
ट्राम्बेमें स्थित परमा
चित्र है। इस परम
अगस्त १९५६ को
था। यह भटटी परमा
के लिए बनाई गई है (

(१५) इस वर्षक

छोटी छोटी ब

"अगर रो रोकर घर सिरप
जल्दी दूध दे सकती है?

१८९० में कलकत्ता विश्वविद्यालयसे बी. ए. पासकर आपने इंग्लैंड जाकर बैरिस्टरी पास की। एक विख्यात बैरिस्टर होनेके साथ ही आप एक कुशल राजनीतिज्ञ, भावुक कवि और सफल संपादक भी थे। अपनी योग्यता और देश-सेवाके कारण आप १९२१ के अहमदाबाद और १९२२ के गया कांग्रेस अधिवेशनोंके अध्यक्ष बनाए गए। असहयोग आंदोलनमें आपने खूब चलती हुई बैरिस्टरीको छोड़कर सक्रिय भाग लिया और जेल गए। १६ जून १९२५ को दार्जिलिंगमें इस महान देशभक्तका देहांत हो गया (चित्र–११)।

(१४) वर्तमान दस रुपये वाले टिकटकी जगह १४ नवंबरको एक नया दस रुपयेवाला टिकट निकाला गया जिसका रंग गहरा नीला और हरा है। इस टिकटपर बम्बईके निकट ट्राम्बेमें स्थित परमाणु भट्टी 'अप्सरा' का चित्र है। इस परमाणु भट्टीका उद्घाटन ४ अगस्त १९५६ को पं. नेहरू द्वारा किया गया था। यह भट्टी परमाण-शक्ति संबंधी शोध-कार्यों के लिए बनाई गई है (चित्र–१३)।

(१५) इस वर्षका अंतिम टिकट 'मैथिल कोकिल' महाकवि विद्यापतिकी स्मृतिमें १७ नवंबरको निकाला गया। गहरे भूरे रंगमें छपे इस टिकटपर महाकवि विद्यापतिका चित्र है। विद्यापतिका जन्म सन् १३५० के लगभग दरभंगा जिलेके बिसपी ग्राममें हुआ था। इनके पिताका नाम गणपति ठाकुर और माताका नाम हांसिनी देवी था। इन्होंने अपने पदोंमें राधाकृष्ण और शिव-पार्वतीके रूप-सौंदर्यका मनोहर वर्णन किया है। इनका देहांत सन् १४४० में हुआ माना जाता है (चित्र–९)।

(१६-१७) इन टिकटोंके अलावा गत वर्ष १४ नवंबरको नेहरूजीकी यादमें निकाले गए विशेष टिकटको इस वर्ष १५ जनवरीको सेना-दिवसपर गाजा, विएतनाम और लाओसके सैनिक डाकखानोंसे पुनः जारी किया गया जिसे संयुक्त राष्ट्र संघकी ओरसे इन देशोंमें तैनात हमारे सैनिकोंने काममें लिया। गाजामें जारी किए गए टिकटपर लाल स्याहीसे यू. एन. इ. एफ. (संयुक्त राष्ट्रीय आपात सेना) तथा विएतनाम और लाओससे जारी किए गए टिकट पर आई. सी. सी. (अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग) अंकित है (चित्र–२ व ६)।

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

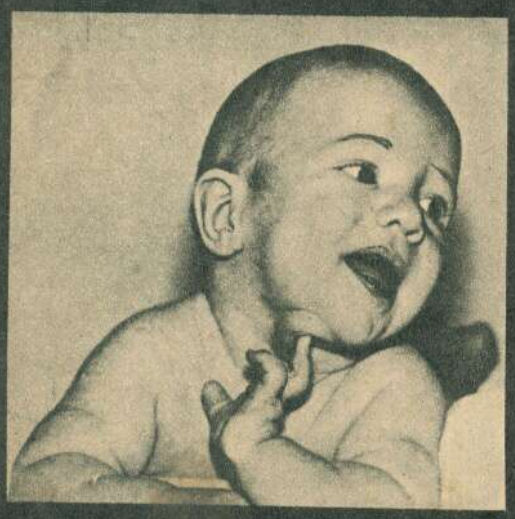

"अगर रो रोकर घर सिरपर उठा लिया जाए, तो मम्मी जल्दी दूध दे सकती है? तुम्हारा क्या खयाल है?"

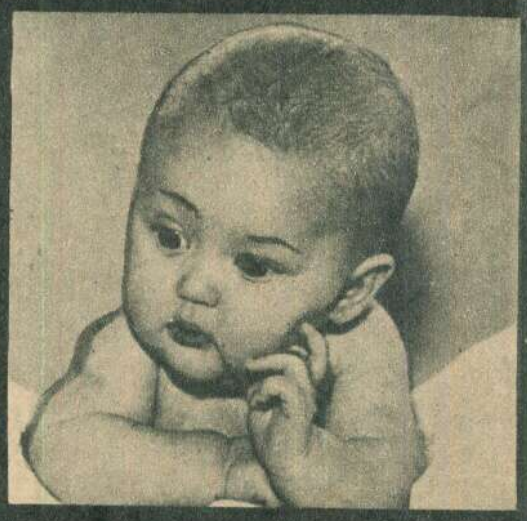

हां, यार, दे तो सकती है, पर पहले एक करारा-सा चपत भी लगा सकती है!

छोटू और लंबू

तो, जो कुछ हमने कहा, समझ गए न?
हां, हां, शाम होने से पहले सब कुछ तुम्हें मिल जाएगा!

पड़ोसियों को "अप्रैल फूल" बनाने की अच्छी तरकीब समझ में आई है!
ही, ही, ही!

थोड़ी देर बाद...
पड़ोसियों से निवेदन है कि आज रात हमारे यहां मुफ्त फिल्म देखें और चाय-पान भी करें!

पड़ोसियों में फौरन बात फैल गई...
कुछ दाल में काला नजर आता है!
कोई बात नहीं!

रात को...
प्यारे भाइयों चाय हाजिर है, हमने आप को मूर्ख बनाने के लिए नहीं बुलाया, दर असल...

...आज हमारी वर्षगांठ इसी लिए दावत दी ग है। चाय तो अच्छी है न?
बहुत अच्छी है, जवाब नहीं!

लेकिन हम लोगों को तो कुछ नजर ही नहीं आता!

सबके जाने के बाद...
हा, हा, हा! तो उन्हें "अप्रैल

झ गए न?

...आज हमारी वर्षगांठ है, इसी लिए दावत दी गई है। चाय तो अच्छी है न?
बहुत अच्छी है, जवाब नहीं!

थोड़ी देर बाद...
हां, तो, देखिए सारे संसार के रंगीन चल-चित्र!
लेकिन?

लेकिन हम लोगों को तो कुछ नजर ही नहीं आता!

ओह! मुझे यही उम्मीद थी। दरअसल आप सब लोगों की आंखें ठीक काम नहीं कर रहीं। अच्छा, फिल्म कल देखिए, आज तो यह जादुई अंजन की पुड़िया चार-चार आने में ले जाइए और लगाइए। आंखें नहीं तो कुछ नहीं!
अरे, बापरे!
अच्छा, यह दस का नोट लीजिए और हम सब के लिए बारह पुड़िया दीजिए!

सबके जाने के बाद...
हा, हा, हा! जब वे पुड़िया खोलेंगे तो उन्हें "अप्रैल फूल" की चिट्ठियां मिलेंगी!
ही, ही, हा! मूर्खों ने यह भी न समझा कि हमने काली फिल्म चलाई थी—बारह आने की चाय पीकर तीन रूपये दे गए!

अररर्र! लंबू, वे तो कुट्टे में हमसे सात रूपये भी ले गए। अंधेरे में उन्होंने हमें नकली नोट दिया, जिसकी एक ओर लिखा है "अप्रैल फूल"!

खेलसिंह पंजाबी, बिलासपुर :

बुद्धिमान बननेके लिए अक्ल कहां मिलती है?

बच्चोंके लिए 'पराग' इसका एकमात्र स्थान है!

सुरेंद्रपाल सिंह, भोपाल :

सोकर उठनेके बाद आलस क्यों आता है?

आंतोंका पिछला काम पूरा नहीं हो पाता, इसी लिए!

सुल्तानी, लुधियाना :

रोनेको दिल करे, तो क्या करना चाहिए?

आसपास कोई हमदर्द देखकर बुक्का फाड़ना चाहिए!

रूपसी घोष, देवघर (संथाल परगना) :

घड़ी रुक जाती है लेकिन समय नहीं रुकता, क्यों?

क्योंकि समयके साथ चलने वाले उसकी नब्जपर बराबर हाथ रखे रहते हैं!

कु. हेमांगी, अहमदाबाद–१ :

दादी अम्मा कहती हैं कि 'पराग' के घरमें घुसनेसे मेरे कहानी-व्यवसायका दीवाला निकल गया—क्या जवाब दें?

कहो कि 'पराग' की चौंसठ जीभें हैं, जबकि तुम्हारी दादी अम्मांकी सिर्फ एक!

राजकुमार चंदेल, झांसी :

क्या कारण है कि एक कुत्तेके भोंकनेपर दूसरे कुत्ते भी भोंकना शुरू कर देते हैं?

संगठन-कलाके पंडित होनेके कारण!

विनोदानंद लाल, नाथनगर (भागलपुर) :

प्यारकी प्यास और पानीकी प्यासमें क्या अंतर है?

पानीकी प्यास पानीकी ठंडकसे बुझती है—प्यारकी प्यास प्यारकी गरमीसे!

ज्ञानचंद गंगवाल, नलबाड़ी (आसाम) :

मांके दूध और गायके दूधमें क्या अंतर है?

मांके दूधमें घास-पात का अंश नहीं होता!

नारायणदास, जोगवनी (पूर्णिया) :

पत्रकारसे कौन डरता है?

बदकार!

वीरेंद्रकुमार मंडलोई, धार :

जबानपर ताले कब पड़ते हैं?

जब वह तालूसे चिपक जाती है!

सोनेको पहचाननेके लिए उसे कसौटीपर कसा जाता है। मनुष्यकी अच्छाई-बुराई जाननेके लिए उसे किस कसौटीपर कसा जाए?

व्यवहारकी कसौटीपर!

मनिंदरपालसिंह, सागर :

यदि किसी हलवाईको भारतका प्रधान मंत्री बना दिया जाए, तो?

भारतको पहले रोटी चाहिए, हलुवा नहीं!

रामअवतार, छपरा :

बाजारमें साबुन अनेक रंगोंका मिलता है, लेकिन झाग सभी सफेद रंगका देते हैं—क्यों?

आदमी अनेक रंगोंका मिलता है, खून सबका लाल होता है—इसी लिए!

गोपाल शिवदासानी, ग्वालियर :

पिताजी मुझे गधा क्यों कहते हैं, जबकि गधेके चार टांगें होती हैं और मेरे सिर्फ दो टांगें हैं?

इसलिए कि गधोंके सींग नहीं होते!

रविंद्रसिंह चतुर्वेदी, खण्डवा :

भगवान मिठाईका ही प्रसाद क्यों लेते हैं, नमकीनका क्यों नहीं?

क्योंकि वरुण देवता (समुद्र) नमकीन खिला खिला कर उनका नाकमें दम किए रहते हैं!

राजीवकुमार, जबलपुर :

जो आदमी जन्मसे अंधा हो, वह स्वप्नमें क्या देखता होगा?

उसके लिए स्वप्न और सत्यमें कोई अंतर नहीं होता!

★ **सुधीरकुमार लाल, २७-ई, न्यू पुलिस लाइंस, पटियाला–२ (पंजाब) :**

सोमवारकी शामको हम लोग व्रत रखते हैं, यदि उस दिन शामको कोई मेहमान आ जाए, तो क्या करें?

चमगादड़ोंके मेहमान भी उल्टे लटकते हैं!

बच्चोंके अटपटे
इस स्तंभमें छापते हैं
पटे होंगे, उन्हें सुंदर
पुरस्कार मिले हैं, उनके
लगा है। प्रश्न कार्डप
तीनसे ज्यादा मत भे
संपादक, 'पराग (अट
२१३, टाइम्स आफ

रविकांत पुरी, दिल्ली–

मनकी तरंग औ
अंतर है?

सागरकी तरंग कभी
तरंग वहां अपने टेलीविजन

छगन खत्री, अमरावती

शास्त्रीजी आपकी
लाल भी थे और बहा

लक्ष्मणप्रसाद, समस्तीपु

हम बच्चे स्वर्गीय
को सच्ची श्रद्धांजलि कै
अपने छोटे-मोटे शत्रुअ
करके!

सुनील शर्मा, नाहन :

ताशकंद क्या कोई
उन लोगोंके लिए जो
मक्खन-मिश्री खाकर मरना

गीता वाजपेई, लखनऊ

मेरी रायमें २० ज
के रूपमें मनाई जानी
भारतीय महिला प्रधान
दिन हुआ था—आपकी
अवश्य —इस रूपमें
पढ़ाईका समय सवाया रखा

राकेश शर्मा, मेरठ :

आपको पत्र लिखनसे
इसे मूर्खता समझना!

वेदप्रकाश जैन, रामगढ़ (

'पराग' को पढ़नेके
जुगाली!

प्रधान मंत्री

नहीं!

मिलता है,
—क्यों?
सबका लाल

हैं, जबकि
सर्फ दो टांगें

क्यों लेते हैं,

खिला खिला

स्वप्नमें क्या

ई अंतर नहीं

लिस लाइंस,

व्रत रखते
न आ जाए,

ते हैं!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

रविकांत पुरी, दिल्ली–३४ :

मनकी तरंग और सागरकी तरंगमें क्या अंतर है?

सागरकी तरंग कभी चांदको नहीं छू सकती, मनकी तरंग वहां अपने टेलीविजन कैमरे पहुंचा चुकी है!

छगन खत्री, अमरावती :

शास्त्रीजी आपकी दृष्टिमें?

लाल भी थे और बहादुर भी!

लक्ष्मणप्रसाद, समस्तीपुर :

हम बच्चे स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्रीको सच्ची श्रद्धांजलि कैसे दे सकते हैं?

अपने छोटे-मोटे शत्रुओंके साथ 'ताशकंद सम्मेलन' करके!

सुनील शर्मा, नाहन :

ताशकंद क्या कोई कलाकंद जैसी मिठाई है?

उन लोगोंके लिए जो देशपर शहीद होनेके बजाए मक्खन-मिश्री खाकर मरना चाहते हैं!

गीता वाजपेई, लखनऊ :

मेरी रायमें २० जनवरी महिला दिवसके रूपमें मनाई जानी चाहिए, क्योंकि प्रथम भारतीय महिला प्रधान मंत्रीका निर्वाचन इसी दिन हुआ था—आपकी क्या राय है?

अवश्य —इस रूपमें कि स्कूल-कालिजोंमें उस दिन पढ़ाईका समय सवाया रखा जाए!

राकेश शर्मा, मेरठ :

आपको पत्र लिखनसे बड़ी मूर्खता कौनसी है?

इसे मूर्खता समझना!

वेदप्रकाश जैन, रामगढ़ (हजारीबाग) :

'पराग' को पढ़नेके बाद क्या करना चाहिए?

जुगाली!

राजेंद्रकुमार गुप्ता, जयपुर :

क्या कारण है कि भारत जैसे श
के राष्ट्र-चिन्हमें हिंसाके प्रतीक सिंह
स्वयं 'हिंसा' शब्द ही 'अ-हिंसा' में मौ

जमुनाप्रसाद जायसवाल, बस्ती :

यदि मेरा मित्र मुझे बेवकूफ बन
सोच रहा हो, तो मुझे क्या करना चा
उसका ध्यान स्वयं उसकी बेवकूफि
मोड़ देना चाहिए!

राजेश कौल, शाहजहांपुर :

एक दिन अपनी मांसे मैंने पिक्च
लिए पैसे मांग, तो जवाब मिला—'उ
पैदा हुए और आज पिक्चर देखने ज
दूसरे दिन मैं अपने कुत्तेकी पूंछ खींचने लग
दो चपत पड़े और कहा गया—'मेरे बर
होनेको आए—तमीज कब सीखोगे?' इसक
मतलब बतानेका कष्ट करें।

इसका मतलब है कि जिसका मनोरंजन कुत्तेकी पंछ खींचनेसे हो जाता है उसका पिक्चर देखना बेकार है!

रवींद्रनाथ सिन्हा, रांची :

जब पानी या दूध खौलता है, तो भाप निकलती है, जब खून खौलता है तब क्या निकलता है?

पिटने वाले बच्चेका बाप निकल पड़ता है!

★ कु. शशिकला त्यागी, द्वारा वेदप्रकाश त्यागी, म. नं. एच। १८ (पुराना), बी.एच.यू. वाराणसी–५ :

लोग कहते है किस्मत फूट गई, तो क्या किस्मत मिट्टीकी होती है, जो फूट जाती है?

पकड़ ढीली होते ही मिट्टीकी हो जाती है!

शशिकांत पुरी गोस्वामी, ममोड़ी (छिन्दवाड़ा)

बताइए—डाक्टर, वकील और नेतामेंसे मैं क्या बनूं, जबकि मैं भ्रष्टाचारसे दूर रहना चाहता हूं?

सिर्फ चाहो नहीं, रहो भी, तो कुछ बन सकते हो!

विमलकुमार जैन, खरगोन (प. निमाड़) :

क्या कारण है कि मच्छर मनुष्यको अंधेरेमें भी खोज लेता है?

भूखेको रसोईकी सुगंध अंधेरेमें भी खींच लेती है!

नागुसा पवार, गुलबर्गा :

अलंकार और अहंकारमें क्या अंतर है?

अलंकार धारण करने वाला दर्पणकी ओर भागता है, अहंकारी उससे दूर! ●

खेलसिंह पंज
बुद्धिमा
बच्चोंके
सुरेंद्रपाल सि
सोकर
आंतोंक
सुल्तानी,
रोनेक
आसप
रूपसी घो
घड़ी
क्यों?
क
बराब
कु

(२१)

मंजरीके चित्रका कोई भी नाक-नक्श मंजरीसे मेल नहीं खाता था, फिर भी सभी बौनी लड़कियोंने उसकी तारीफके पुल बांध दिए। सब इस बातसे सहमत थीं कि किसी चित्रकी सबसे बड़ी खूबी यही होती है कि वह सुंदर लगे, भले ही नाक-नक्श न मिलें।

जब यह चर्चा चल रही थी, तभी एक लड़की भागी भागी आई और उसने सूचना दी कि शायदसिंह और झटपटराम भाग खड़े हुए। डाक्टर मधुपीने हर रोज दो-दो लड़कोंको छोड़ना शुरू किया था। उस रोजका कोटा वह पूरा कर चुकी थीं। लेकिन कुछ लड़कियोंने उनसे अनुरोध किया कि कुछ और लड़कोंको छोड़ दिया जाए। शायदसिंह और झटपटराम इसी अनुरोधके बलपर छूटकर लड़कियोंके साथ अस्पतालसे चले, लेकिन रास्तेमें भाग खड़े हुए। यही नहीं, पता चला कि दोनों सेबोंके पेड़पर चढ़े बैठे हैं। सारी लड़कियां उन्हें देखनेके लिए दौड़ पड़ीं।

सचमुच ही दोनों सेबोंके पेड़पर चढ़े सेब तोड़नेकी कोशिश कर रहे थे। कभी उसकी टहनी मरोड़ते, कभी खींचते, मगर सेब था कि टूटनेमें ही नहीं आ रहा था। जितना बड़ा सेब, उतने ही बड़े वे खुद! लड़कियोंको देखकर उन्होंने अपनी कलाबाजियां और भी तेज कर दीं। जब सेब नहीं टूटा, तो लड़कियां उनपर हंसने लगीं। अन्नपुष्पा ठहाका लगाते हुए बोली, "हुंह! सेब तोड़ना तुम्हारे बसका नहीं है।"

शायदसिंह चिल्लाया: "क्या खी-खी लगा रखी है! सेब तोड़ना क्या कोई हंसी-खेल है?"

"तोड़ना ही है, तो आरीसे टहनी काटो—शायद टूट जाए," अन्नपुष्पाने हंसते हुए कहा।

"तो फिर लाओ न आरी दौड़कर,"

परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो योंके थे—बौने लड़के और बौनी लड़-। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया। नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचाने वाली थीं बौनी लड़कियां। बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हैं, तो वह तुरंत कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां जा पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें नंबरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे। सबसे पहले छुट्टी मिली तानप्रकाश बांसुरीवादक और कूंचीराम चित्रकारको, इसके बाद छोड़े गए मंडूमल और मोडूमल टिनसाज।

चारोंने बाहर आकर क्या किया—यह तुम पिछले अंकोंमें पढ़ चुके हो। अब कुछ दूसरे बौनोंकी अस्पतालसे रिहाई और उनकी कार-गुजारियोंका हाल पढ़ो।

धारावाही उपन्यास

बुद्धूमल के कारनामे

मूल लेखक: निकोलाई नोसोव

झटपटराम बोले। "फि
तोड़ तोड़कर सेबोंका
लगा दिया तो।"

अन्नपुष्पा दौड़कर
घरसे आरी ले आई
झटपटरामको थमा दी
पटरामने झटपट टहनी
चलाई और सेब झटसे
पर आ रहा।

"हे राम! कितन
सेब!" लड़कियां चिल्ल
एकने सलाह दी कि
फसलका खलियान बन
चाहिए। लड़के लोग
आ ही गए हैं।

हरा गांवके हर घर
मौसमके लिए फल का
मिलकर सेबको लुढ़क
आगेवाले चौड़े रास्तेसे
ले गईं। दरवाजेके
लुढ़ककर तहखानेमें पहु
लिए वापस दौड़ीं, तो
को लुढ़काती मिलीं। एक
वह दौड़कर दूसरी आरी
अपनी स्कर्टके ऊपर निक
पहने वह खुद पेड़पर चढ़

"ऐ लड़की!" शा
दे। तुझे क्या पता आरी

"अच्छा, तो तुम्हें प
एक डालपर जम गईं और
आरीसे काटने लगी। श

"आओ मिलकर क
बाद बोला। "पहले तुम
फिर मैं आराम कर लूंग

"अच्छी बात है," लड़

इधर यह काम चलता
चल पड़ी। मोडूमल और
आए थे और लड़कियोंको
गए और अब लौटकर न
कि सारे लड़के न भाग ख
अगर लड़कोंको भागना है,
जाएं, उनकी बला से!—

झटपटराम बोले। "फिर देखो, तोड़ तोड़कर सेबोंका अंबार न लगा दिया तो।"

अन्नपुष्पा दौड़कर पड़ोसके घरसे आरी ले आई और झटपटरामको थमा दी। झट-पटरामने झटपट टहनीपर आरी चलाई और सेब झटसे जमीन पर आ रहा।

"हे राम! कितना बड़ा सेब!" लड़कियां चिल्लाईं और एकने सलाह दी कि सेबोंकी फसलका खलियान बना लेना चाहिए। लड़के लोग मददको आ ही गए हैं।

हरा गांवके हर घरमें एक तहखाना था, जिसमें जाड़ोंके मौसमके लिए फल काटकर रखे जाते थे। लड़कियोंने मिलकर सेबको लुढ़काना शुरू किया और दरवाजेके आगेवाले चौड़े रास्तेसे उसे एक मकानके दरवाजे तक ले गईं। दरवाजेके भीतर पहुंचकर सेब अपने आप लुढ़ककर तहखानेमें पहुंच गया। जब वे दूसरे सेबके लिए वापस दौड़ीं, तो उन्हें कई लड़कियां दूसरे सेबों-को लुढ़काती मिलीं। एक लड़की तो इतने जोशमें आई कि वह दौड़कर दूसरी आरी ले आई और साथ ही साथ अपनी स्कर्टके ऊपर निकर भी पहन आई। निकर पहने पहने वह खुद पेड़पर चढ़ने लगी।

"ऐ लड़की!" शायदसिंहने कहा, "यह आरी मुझे दे। तुझे क्या पता आरी कैसे चलाई जाती है?"

"अच्छा, तो तुम्हें पता है?" कहते कहते वह लड़की एक डालपर जम गई और हाथ बढ़ाकर एक सेबकी टहनी आरीसे काटने लगी। शायदसिंह बैठा बैठा झुलसने लगा।

"आओ मिलकर काम करें," शायदसिंह थोड़ी देर बाद बोला। "पहले तुम आराम कर लो और मैं काटूं, फिर मैं आराम कर लूंगा और तुम काट लेना।"

"अच्छी बात है," लड़की राजी हो गई।

इधर यह काम चलता रहा, उधर लड़कियोंकी जबान चल पड़ी। मोड़ूमल और मेठूमल अब तक लौटकर नहीं आए थे और लड़कियोंको शंका हो चली थी कि वे भाग गए और अब लौटकर नहीं आएंगे। इसपर शंका उठी कि सारे लड़के न भाग खड़े हों। फिर किसीने कहा कि अगर लड़कोंको भागना है, तो कलके भागते आज भाग जाएं, उनकी बला से! —वगैरा वगैरा!

पेप्सोडेण्ट में मिले इरियम प्लस से दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं

यह देखिए किस तरह : केवल पेप्सोडेण्ट में ही वैज्ञानिक विधि से तैयार किया हुआ तत्त्व इरियम प्लस होता है जिसके कारण चमत्कारी झाग बनता है। यह घना, चमत्कारी झाग मुँह के सभी हिस्सों में पहुँच कर अच्छी तरह सफ़ाई करता है। इसमें दाँतों की स्वाभाविक सफ़ेदी प्रकट करने की विशेषता है जिसके कारण दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं—ऐसे साफ़ और सफ़ेद जैसे कि पेप्सोडेण्ट से ही हो सकते हैं। साथ ही, इससे मुँह में पेपरमिण्ट की सी ठंडक और ताज़गी महसूस होती है।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड
का
एक उत्कृष्ट उत्पादन

JWT.HDL 361

जब यहां ये बाते
एक कार सड़कके दूस
सब लड़कियोंने अपना
और शोर मच गया-
आ गए! मोड़ूमल और
मोड़ूमल और मे
भाईकी कारमें और
बुलाया नहीं था। प
गांवकी लड़कियोंका यो
दिया और वाद-विवा
"हुंह! इन्हें कि
ने ताना मारा।
"हुंह! मैं कोई बु
खरखरे भाईने कहा।
"हुंह! न कोई
किसीके यहां जाएं!"
"हुंह! कोई आपके
किसीके यहां क्यों न जा
लंबी बहस चली।
हो गए और 'हुंह' कर
लेकिन बजाए अपनी
वह मोड़ूमल और मेठ
कारकी मरम्मतमें
वालोंकी यह विशेषत
किसीकी कारका हु
भातमें मूसरचंद बनक
रात काली होती
मरम्मत पूरी नहीं हुई।

(

अगली सुबह अन्नपुष्पा
डाक्टर मधुपीको
छोड़े गए थे, उन्होंनें को
वे सेब तोड़ तोड़कर सा
उसने कहा कि आज
छोड़े जाएं।
डाक्टर मौनूमलक
क्योंकि वह अक्सर मौन
करके परेशान करनेप
"इसके अलावा
डाक्टरने चश्मा
सूची देखनी आरंभ की
"शरबतीलाल अ

हुआ तत्त्व
री झाग मुँह
ाविक सफ़ेदी
—ऐसे साफ़
मिण्ट की सी

जब यहां ये बातें चल रही थीं, उसी समय एक कार सड़कके दूसरे सिरेपर आकर रुकी। सब लड़कियोंने अपना काम जहां-का-तहां छोड़ा और शोर मच गया—"मोड़ूमल और मेठूमल आ गए! मोड़ूमल और मेठूमल आ गए!"

मोड़ूमल और मेठूमल आए थे खरखरे भाईकी कारमें और खरखरे भाईको किसीने बुलाया नहीं था। पतंगपुरके निवासियोंसे हरा गांवकी लड़कियोंका यों ही बैर था। सो एकने टोक दिया और वाद-विवाद चल पड़ा।

"हुंह! इन्हें किसने बुलाया था?" बर्डीने ताना मारा।

"हुंह! मैं कोई बुलानेका भूखा बैठा रहता!" खरखरे भाईने कहा।

"हुंह! न कोई हमारे यहां आए, न हम किसीके यहां जाएं!"

"हुंह! कोई आपके यहां क्यों न आए और आप किसीके यहां क्यों न जाएं?" खरखरे भाई ने कहा।

लंबी बहस चली। अंतमें खरखरे भाई नाराज हो गए और 'हुंह' करके वह तेजीसे चल पड़े। लेकिन बजाए अपनी कारमें रफूचक्कर होनेके वह मोड़ूमल और मेठूमलके साथ मिलकर उनकी कारकी मरम्मतमें जुट गए। कार चलाने वालोंकी यह विशेषता होती है। जहां उन्होंने किसीकी कारका हुड खुला देखा, वे दाल-भातमें मूसरचंद बनकर कूद पड़े।

रात काली होती चली गई, मगर कारकी मरम्मत पूरी नहीं हुई।

(२२)

अगली सुबह अन्नपुष्पा अस्पताल गई और उसने डाक्टर मधुपीको बताया कि जो लड़के कल छोड़े गए थे, उन्होंनें कोई ऊधम नहीं मचाया, उल्टे वे सेब तोड़ तोड़कर सारे गांवका हाथ बटा रहे हैं। उसने कहा कि आज भी कुछ ज्यादा, लड़के छोड़े जाएं।

डाक्टर मौनूमलको छोड़नेको राजी हो गई, क्योंकि वह अक्सर मौन रहते थे और सवाल कर करके परेशान करनेपर नहीं तुलते थे।

"इसके अलावा और?" अन्नपुष्पाने पूछा।

डाक्टरने चश्मा चढ़ाकर अपने कैदियोंकी सूची देखनी आरंभ की।

"शरबतीलाल और गोलारामको मैं छोड़ सकती हूं। दोनोंका बरताव अच्छा है, हालांकि दोनोंको अभी बंद रखना चाहिए। गोलाराम तो इतना खाता है कि दूसरे मरीज भूखे रह जाते हैं। उसकी आदत छुड़ानी मुश्किल हो गई है। खाए तो खाए, वह तो जेबोंमें ठूंस लेता है और तकिएके नीचे मिठाई छिपाकर रख लेता है। शरबतीलाल हर वक्त ठंडा शरबत पीता रहता है और सारा सोडा वाटर गड़प कर जाता है।"

डाक्टरने फिर सूची देखी और बोली, "निशानाचंदको छोड़ना असंभव है। उसका घुटना सूजा हुआ है और वही मेरा मरीज है।"

"और रूखाराम?"

"कभी नहीं, कभी नहीं," डाक्टर उछल कर बोली। "उसे तो मैं किसी भाव नहीं छोड़ सकती। इतना खराब लड़का तो मैंने आज तक नहीं देखा —हर वक्त बड़बड़ाना और चुगली खाना। उससे तो तोबा ही भली। वह जहां है वहीं पड़ा रहने दो। बड़बड़ाता रहे। यों उससे जान छूटे, तो मेरी जानमें जान आए, और उस डाक्टर गोलीचंदसे भी—वह हमेशा मेरे नुस्खोंमें नुक्स निकालता रहता है।"

सो, काफी बहसके बाद अन्नपुष्पा संभवसिंह, चंचलराम, मौनूमल, गोलाराम और शरबतीलालको अस्पतालसे निकालनेमें सफल हो गई। डाक्टर गोलीचंद, रूखाराम और निशानाचंद अस्पतालमें ही रह गए।

अगले दिन सूरज उगनेसे पहले ही मोड़ूमल, मेठूमल और खरखरे भाई फिर कारकी मरम्मत पर जुट गए और घंटों उसमें लगे रहे। आखिरकार इंजिन फट फट करने लगा और चल पड़ा। जब उसका चलना सुगम हो गया, तो उन्होंने कारकी परीक्षा ली और घरोंके चारों तरफ धूल उड़ाते फिरते रहे। अंतमें वे उस जगह पहुंचे, जहां सेब तोड़े जा रहे थे। झटपटराम, चंचलराम, शायदसिंह, संभवसिंह सेबके एक पेड़पर चढ़े हुए थे। तानप्रकाश, मौनूमल और निकरवाली लड़की एक नाशपातीके पेड़पर थे। सभी लड़कियां सेबों को इधर-उधर लुढ़का रही थीं और बुद्धूमल यहां-वहां सबको हुक्म सुनाते हुए चक्कर काट रहे थे।

"ऐ, तुममेंसे पांच यहां लगो, पांच वहां लगो!" बुद्धूमल चिल्लाए जा रहे थे, "ऐ, अब इस सेबको लो। पीछे हट जा री लड़की, क्या

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

खेल-कूद

फुटबाल की कहानी

—हरिमोहन

('पराग'के पिछले अंकोंमें तुमने फुटबालके जन्म की कहानी, खेलनेके नियम तथा तरीकोंके बारेमें पढ़ा था । लो, अब पढ़ो भारतीय खिलाड़ियोंके कौशलके बारेमें।)

(४)

हमारे देशमें फुटबालका खेल अंग्रेज लोग लाए थे। उन्होंने यहां फुटबाल खेलना १८५७ से पहले ही आरंभ कर दिया था। फुटबालके सर्वमान्य वर्तमान नियम तब तक लागू नहीं हुए थे। उन दिनों रैफरी नहीं होता था और दोनों दलोंके कप्तान ही आपसमें सारे झगड़े तय कर लेते थे। बादमें खेलका नियंत्रण एक रैफरी और दो लाइनमैन करने लगे। १८७५ में क्रासबार और १८९१ में गोलपोस्टके पीछे जाल रखा जाने लगा।

भारतमें फुटबाल सबसे पहले कलकत्तामें खली गई। यही वजह ह कि बंगालके खिलाड़ी हमेशासे इस खेलमें आगे रहे हैं। कलकत्ताका डलहौजी क्लब भारतका सबसे पुराना फुटबाल क्लब था। इसकी स्थापना १८७८ में हुई थी। इसके बाद फुटबालके तीन क्लब और स्थापित हुए, जिनके सब खिलाड़ी हिंदुस्तानी ही थे। ये क्लब थे—शोभा बाजार क्लब, मोहन बागान क्लब और मुहम्मडन स्पोटिंग क्लब। १८९२ में शोभा बाजार क्लबने अंग्रेजोंको फुटबालमें हराकर भारतीय फुटबालको एक नया मोड़ प्रदान किया। इस हार पर इंग्लैंडके अखबारोंने खूब शोक प्रकट किया था।

मोहन बागान और मुहम्मडन स्पोटिंग क्लबोंकी टीमें आज तक भारतकी दो अति शक्तिशाली टीमोंके रूपमें विख्यात हैं।

हिंदुस्तानी खिलाड़ियोंकी अंग्रेजोंपर जीतके

फुटबाल संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : कुछ ऐसे पुराने हिंदुस्तानी फुटबाल खिलाड़ियोंके नाम बतानेकी कृपा करें, जो अपने कालमें काफी प्रसिद्ध थे।

जवाब : गोष्ठबिहारी लाल, हीरालाल मुकर्जी, जे. एन. राय, हाबुल सरकार, एस. के. चटर्जी आदि।

सवाल : क्या आई. एफ. ए. शील्ड प्रतियोगिता आज भी जारी है?

जवाब : हां, वह देशकी चार सबसे बड़ी और मानी हुई फुटबाल प्रतियोगिताओंमेंसे एक तो है ही, बंगाल क्षेत्रकी सबसे बड़ी फुटबाल प्रतियोगिता भी है। उसमें जीतने वाली टीमको बंगालकी सबसे अच्छी टीम माना जाता है।

सवाल : क्या यह सच है कि कभी डूरेन्ड कप भारतके हाथसे निकलकर पाकिस्तानके पास जाने वाला था?

जवाब : हां, पाकिस्तानके हाथसे इसे बचानेके लिए कलकत्ताकी दो फुटबाल टीमोंने एक फर्जी मैच खेला था, और इस तरह पाकिस्तानको चकमा देकर इसे भारतकी ही सम्पत्ति बनाए रखा।

सवाल : रग्बी और फुटबाल में क्या अंतर है?

जवाब : रग्बीमें खिलाड़ी खेलते समय पांवों के अलावा हाथका भी प्रयोग कर सकते हैं। असलमें रग्बीका जन्म हुआ ही तब था, जब रग्बी नामके एक स्कूलका एक लड़का फुटबाल लेकर खेलते समय फुटबाल लेकर भागने लगा था। फुटबाल और रग्बीका एक दिलचस्प अंतर इस प्रकार है : 'रग्बी शरीफाना खेल है, जिसे वे लोग खेलते हैं, जो शरीफ नहीं हैं, और फुटबाल शरीफाना खेल नहीं है, पर उसे शरीफ लोग खेलते हैं।'

सवाल : आधुनिक फुटबालकी खेल-शैलीमें सबसे ज्यादा क्रांतिकारी परिवर्तन कब हुआ?

जवाब : १९५० में जब हंगरीकी शक्तिशाली फुटबाल टीमके कप्तान पुस्कसने आगे रह कर बचाव करने वाले खिलाड़ियोंकी दो लाइनों के स्थानपर एक लाइन ही रखी। अब यह शैली प्रायःसभी देशोंने अपना ली है।

एक साहस-कथा:

दादा की वीरता

• विद्वान के नारायणन्

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिरके पासके विशाल मैदानमें बहुत बड़ा पंडाल बन रहा था। सैकड़ों मजदूर काममें लगे हुए थे। बड़े बड़े हाथी करीब बीस फुट लंबे और बहुत भारी काठके खंभोंको अपनी सूंड़में उठाए आते और महावतकी आज्ञानुसार उन्हें गड्ढोंके अंदर उतार देते। उनकी अनोखी सूझ-बूझ और आज्ञाकारिता देखकर बड़ा अचरज होता था। वे महावतोंका हर इशारा, हर बात ठीक ठीक समझ लेते थे और सौंपे गए हर कामको सुचारु रूपसे कर देते थे।

यह पंडाल 'मुरजपम्' के सिलसिलेमें बन रहा था। 'मुरजपम्' केरलका एक महोत्सव है, जो छह सालमें एक बार मनाया जाता है। मकर संक्रांतिके चालीस दिन पहले यह महोत्सव शुरू होता है। चालीस दिन तक इसके लिए विशेष रूपसे निर्मित पंडालमें क्रमपूर्वक मंत्रोंका जाप, पूजा-पाठ आदि होते हैं और मकर संक्रांतिके दिन समापन उत्सव होता है। वह दिन 'लक्षदीप' का दिन कहलाता है, क्योंकि उस दिन मंदिरमें एक लाख दीप जलाए जाते हैं। दीपोंसे जगमगाते इस मंदिरके दर्शनोंके लिए दूर दूरसे भक्तजन आते हैं।

केरल हाथियोंका प्रदेश है। सुसज्जित हाथियों की पीठपर भगवानकी मूर्ति रखकर जुलूसमें ले जाना एक आम बात है। महावतोंके आठ-दस सालके लड़के भी निर्भयतासे हाथियोंका संचालन करते हैं। हाथियोंके नाम भी होते हैं—वेलायुधन, चंद्रशेखरन आदि। महावत लोग हाथियोंको अपने ही परिवारके अंग समझते हैं; उन्हें खिलाते-पिलाते हैं, नहलाते हैं और उनके साथ खेलते भी हैं।

खंभे उठाकर लाने वाले हाथियोंमें एक बहुत बड़ा था। उसका नाम 'वेलायुधन' था। वेलायुधन वैसे तो बड़ा आज्ञाकारी था, पर उस दिन उसका मिजाज कुछ बिगड़ा हुआ था। इसका एक कारण भी था।

उत्सवके इस प्रमुख हाथीको रोज सबेरे नहलाकर उसके माथेपर सफेद चूर्णसे तिलक लगाया जाता था। हमेशा तिलक लगाने वाला आदमी उस दिन बीमारीके कारण आ न सका। दूसरा जो नया आदमी आया, वह वेलायुधनको बिल्कुल पसंद नहीं आया। तिलक लगाते वक्त भी वेलायुधन अपने असंतोषके प्रदर्शनके रूपमें कुछ बिगड़ पड़ा था। पर महावतने उसे कठोर स्वरमें डांटकर काबूमें कर लिया था। वेलायुधन उस समय तो खामोश हो गया, पर उसके मनमें यह बात बराबर खटकती रही।

पंडालके लिए
युधनके मनमें हलचल
बड़े खंभे भी वह आ
काम कितना भी
थकता था। पर
बिगड़ी हुई थी,
उसने कुछ लापरवाही
दी। इसपर महावत
अंकुशका प्रयोग कर
वेलायुधन आपेसे
जिस असंतोषको
साथ दबा रखा था,

उसने खंभेको
दिया और तेजीसे
महावत तो बहुत
था फिर भी वेलायु
से स्वयं वह भी घब
उसकी जान खतरेमें
नीचेसे होकर जा
स्थान से उछलकर
लटक गया और डा

आखिरी बार खंगालते समय बस ज़रा सा टिनोपाल मिलाइए, फिर देखिए आपके धुले हुए शर्ट्स, साड़ियों, चद्दरों, व तौलियों आदि कपड़ों में कितनी चमकदार सफ़ेदी आजाती है।

और इस पर आपका खर्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं! टिनोपाल एक वैज्ञानिक व्हाइटनर है...कपड़ों के लिए बिल्कुल हानिरहित।

टिनोपाल से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है!

Geigy

टिनोपाल जे. आर. गायगी एस. ए. बाल, स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

सुहृद गायगी लिमिटेड, पो. ऑ. बॉक्स ९६५, बम्बई १ बी.आर.

Shilpi SGT-70 HIN

होकर दौड़ने लगे । र
की पड़ी हुई थी, कौन
तेजीसे आगे बढ़ा। और
पर रामू भागते भा
पड़ा। हाथीने उसे
लिया।

पल भरमें हाथी रा
मगर दादा मारुतिदा
झपटकर हाथीकी सूंड
रामूको छुड़ानेकी कोि

अब बेलायुधनक
ओर गया। उसने
रामू उठकर भाग ग
सारा गुस्सा मारुति
भयंकर चिंघाड़के सा
को बढ़ा।

मारुतिदासकी
थी। देखनेमें दुबले-प
ही बलवान और स
सवेरे चार बजे
थे, शामको कसरत
बद्ध जीवन बिताते थे
बहुत ही सहृदय अ
उनका स्वास्थ्य इतन
भी ईर्ष्या करें।

हाथीको हमला
लगे। हाथी उनक
कदम बढ़ाता जा र
बाहर सड़कपर आ
ऊंची ऊंची दीवारें
संभव नहीं था। दा
चाल तेज होती ग
बढ़ाते गए। हा
पास पहुंच जाता।
दौड़ना जारी रखते
देखते, तुरंत घरके
लेते।

दादाको कोई
नहीं दिया कि अंदर

काफी देर द
गए। फिर भी उ
दौड़ना जारी रखा
जूद उनकी चाल

होकर दौड़ने लगे । सबको अपनी अपनी जानकी पड़ी हुई थी, कौन दूसरेकी चिंता करे? हाथी तेजीसे आगे बढ़ा। और लोग तो भागकर बच गए, पर रामू भागते भागते ठोकर खाकर गिर पड़ा। हाथीने उसे फौरन अपनी सूंडमें उठा लिया।

पल भरमें हाथी रामूको परों तल कुचल देता, मगर दादा मारुतिदासने पलक झपकते झपकते झपटकर हाथीकी सूंडको पकड़ लिया और उससे रामूको छुड़ानेकी कोशिश करने लगे।

अब वेलायुधनका ध्यान मारुतिदासकी ओर गया। उसने रामूको नीचे डाल दिया। रामू उठकर भाग गया। वेलायुधनने अपना सारा गुस्सा मारुतिदासपर उतारना चाहा। भयंकर चिंघाड़के साथ वह उनपर हमला करनेको बढ़ा।

मारुतिदासकी उम्र लगभग ७० सालकी थी। देखनेमें दुबले-पतले लगते थे, पर थे बहुत ही बलवान और साहसी। इस उम्रमें भी रोज सवेरे चार बजे उठकर ठंडे पानीसे नहाते थे, शामको कसरत किया करते थे और नियमबद्ध जीवन बिताते थे। वह हनुमानके बड़े भक्त थे। बहुत ही सहृदय और लोकप्रिय व्यक्ति थे। उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि जवान लोग भी ईर्ष्या करें।

हाथीको हमला करते देख दादा तेजीसे दौड़ने लगे। हाथी उनका पीछा करता हुआ तेजीसे कदम बढ़ाता जा रहा था। अब दोनों मैदानके बाहर सड़कपर आ गए थे। सड़कके दोनों तरफ ऊंची ऊंची दीवारें थीं। इसलिए कहीं छिप पाना संभव नहीं था। दादा सीधे दौड़ते रहे। हाथीकी चाल तेज होती गई। दादा भी अपनी तेजी बढ़ाते गए। हाथी कभी कभी दादाके बहुत पास पहुंच जाता। दादा बाल बाल बच जाते और दौड़ना जारी रखते। जो लोग दूरसे हाथीको आते देखते, तुरंत घरके अंदर जाकर किवाड़ बंद कर लेते।

दादाको कोई खुला हुआ दरवाजा ही दिखाई नहीं दिया कि अंदर जाकर बच जाएं।

काफी देर दौड़ते दौड़ते दादा बहुत थक गए। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दौड़ना जारी रखा। मगर कठिन कोशिशके बावजूद उनकी चाल धीमी होती गई और हाथी तथा उनके बीचका फासला कम होता गया। हनुमानका ध्यान करते हुए दादा यथाशक्ति दौड़ते गए। आखिर उनके पैर लड़खड़ाने लगे। अब हाथी बहुत समीप आ गया था।

दादा अब जिस स्थानसे होकर दौड़ रहे थे, वहां पास पासके दो घरोंकी पत्थरकी बाहरी दीवारोंके बीच एक तंग गली-सी दिखाई पड़ी। दादा फौरन उसमें घुस गए। हाथी भी रुक गया। वह इतनी तंग जगहमें घुस नहीं सकता था, इसलिए बाहर ही खड़े होकर अपनी सूंड बढ़ाकर दादाको पकड़नेका प्रयत्न करने लगा। दादा धीरे धीरे आगे बढ़ते गए। यदि यह गली-सी जगह बहुत दूर तक चली जाती, तो दादा आसानीसे बच जाते। मगर यहां एक दूसरी कठिनाई आ उपस्थित हुई। वह जगह थोड़ी दूरके बाद एक तीसरी दीवारके सामने आ जानेके कारण बंद हो गई थी।

दादा यथासंभव आगे जाकर उस दीवारसे सटकर खड़े हो गए। हाथीने अपनी सूंड़ यथासाध्य आगे बढ़ाई। सूंड़ दादाके पास तक तो पहुंच गई, उन्हें जरा छुई भी, लेकिन लाख कोशिश करनेपर भी हाथी दादाको सूंडमें लपेट न पाया।

वह थोड़ीदेर तक यों ही सूंडको इधर-उधर हिलाकर कोशिश करता रहा। आखिर उकताकर उसने सूंड़को पीछे खींच लिया।

अब हाथी अपनी असफलताके कारण आगबबूला हो गया। वह जोरसे चिंघाड़ता हुआ सड़क पर अंधाधुंध चलने लगा। सारे शहरमें खलबली मच गई।

इस बीचमें पुलिसको खबर पहुंच गई थी और बंदूकोंसे लैस एक टोली लारीमें आ पहुंची थी।

हाथी बड़ा उपद्रव मचाने लग गया था। उसने कई बाग-बगीचे उजाड़ डाले। फिर वह झोंपड़ियोंको उखाड़ने लगा।

वैसे तो उपयोगी जानवरोंको शांतिपूर्ण उपायोंसे काबूमें लानेकी यथा-संभव कोशिश की जाती है, पर यह हाथी काबूसे बाहर हो गया था। इसलिए पुलिसको गोलियां दागकर उसे मार गिराना पड़ा।

दादाकी वीरता और साहससे उनकी तथा रामूकी जानें बच गईं। ●

, चद्दरों, व तौलियों आदि
नर है...कपड़ों के लिए
ऑ. बॉक्स ९६६, बम्बई १ बी.आर.
Shilpi SGT-70 HIN

कहानी

गप्पी राजा

—रामपाली भाटी

गोपाल नामका एक लड़का था। राजस्थान-के बाड़मेर प्रदेशमें उसका मिट्टीसे बना तथा छप्परसे छाया हुआ घर था। उसके पिताके पास छोटे छोटे दो खेत थे, जिनमें वह वर्षाके समय खेती करता था। इसके अलावा उसके पास बढ़िया नस्लकी एक सौ भेड़ें भी थीं।

गोपालको पढ़ने-लिखनेका समय बिल्कुल भी नहीं मिल पाता था। वह अपनी भेड़ोंको चरानेके लिए सवेरे जल्दी चला जाता था और शाम होने पर ही घर लौटता था। घर आनेपर उसकी मां उसे बाजरेकी रोटी, गुड़, थोड़ा-सा भेड़का दूध भोजनके लिए देती और रातमें सुंदर सुंदर कहानियां सुनाती।

गोपाल रातको सुनी कहानियोंको दिन भर भेड़ चराते समय मन ही मन दुहराया करता और विचार करता कि कोई परी, देव या जादूगर उसे भी मिले, तो बड़ा मजा रहे। कभी कभी वह घर लौटनेपर मांको झूठमूठकी कहानी बनाकर सुनाता कि आज बबूलके पेड़पर बैठा हुआ देव मिला था या खेजड़ेके पेड़के नीचे खड़ी हुई परीके पैरका कांटा निकालकर उसने उसे अपने आधीन कर लिया है। गोपालकी मां उसकी इन गप्पोंको सुनकर हंसते हंसते लोटपोट हो जाती।

गोपालकी यह गप्प मारनेकी आदत बढ़ती गई। वह दिन भर अपनी भेड़ोंसे बातें किया करता। कभी वह राजा बनता और भेड़ोंको अपनी प्रजा बनाता। कभी राजकुमार बनकर किसी मोटे मेढ़ेको घोड़ा बना, उसपर सवार हो शिकारके लिए निकलता। इस प्रकार वह दिन भर आनंद-से रहता और शामको घर लौटनेपर सब बातें अपनी मांसे कहता। मां अपने गप्पी बेटेकी बातों पर हंसती और उसे 'गप्पी राजा' कहकर प्यार करती।

धीरे धीरे गोपालको सभी 'गप्पी राजा' कहने लगे। अब उसका असली नाम गोपाल लोग भूलने लगे थे। 'गप्पी राजा' भी अपने इस नए नामपर प्रसन्न था और अपने आपको किसी राजा-से कम नहीं समझता था।

एक दिन गप्पी राजा अपनी भेड़ोंके साथ दूर बालू-रेतके टीलोंके उस पार गया हुआ था। भेड़ें दूर दूर फैलकर चर-चुग रही थीं। गप्पी एक ऊंचे टीलेपर बैठकर सोचने लगा : 'मैं राजा हूं। सामनेका मैदान मेरा राज्य है। यह सोने जैसी बालू-रेत मेरा धन है। भेड़ें इधर-उधर घूमकर

अपना अपना क
यह गोल गोल सपे
का तकिया है। य
मुझे इस रेशमी
चाहिए!'

यह विचारक
सिर कठोर पत्थर
से टकराया। ग
करीब दस अनज
साफे बांधे, कपड़े
ओर घूर रहे थे।
की तरहसे चम

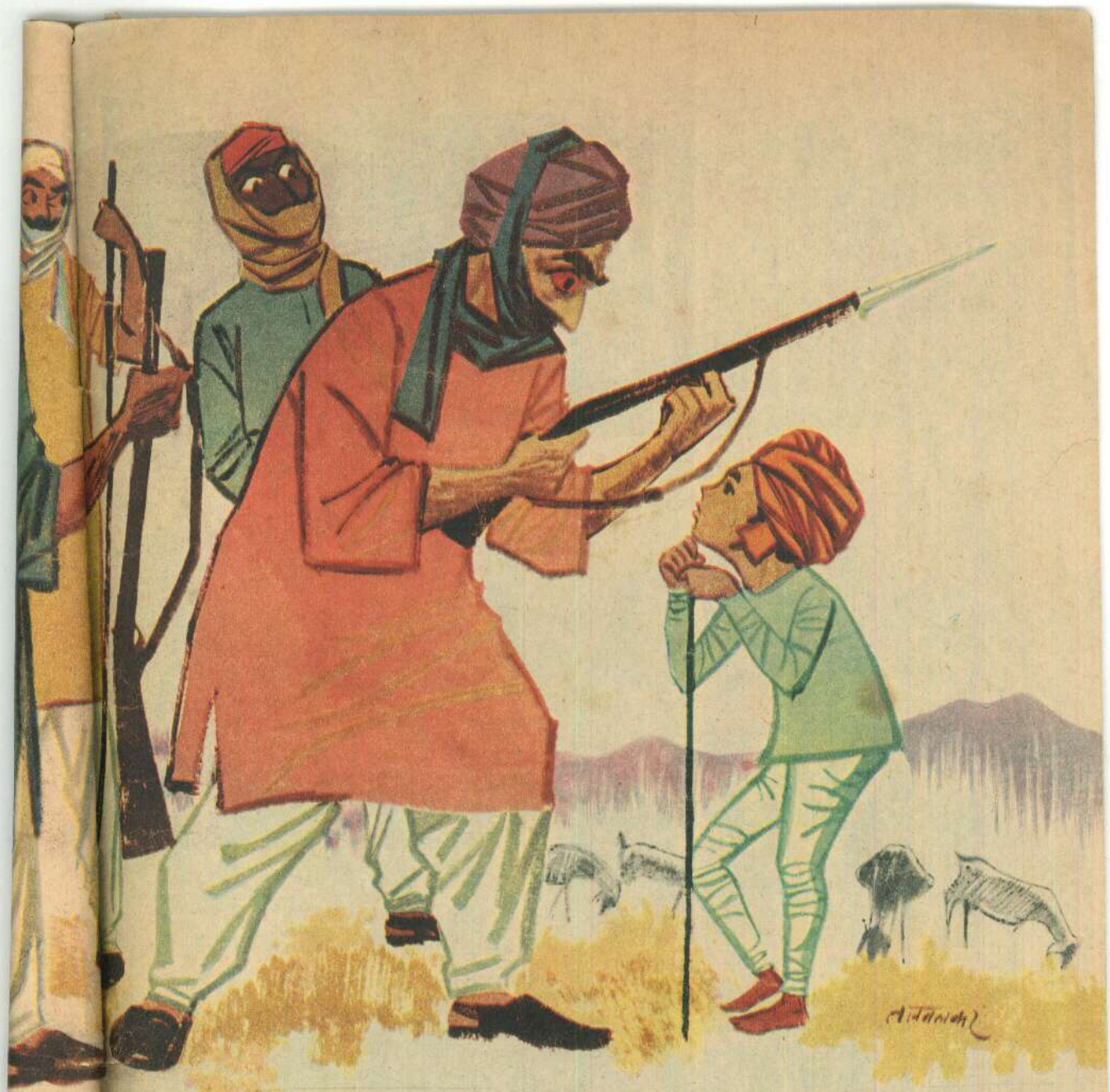

अपना अपना काम करती हुई मेरी प्रजा हैं। यह गोल गोल सफेद पत्थर मेरा नर्म नर्म मखमल-का तकिया है। यह समय राजाके विश्रामका है। मुझे इस रेशमी गुदगुदे पलंगपर आराम करना चाहिए!'

यह विचारकर ज्यों ही वह लेटा, उसका सिर कठोर पत्थरकी अपेक्षा किसी कोमल वस्तु-से टकराया। गप्पी राजाने चौंककर देखा—करीब दस अनजाने आदमी, सिरोंपर बड़े बड़े साफे बांधे, कपड़ेसे अपने मुंहोंको छिपाए उसकी ओर घूर रहे थे। उनकी आंखें जलते हुए कोयलों-की तरहसे चमक रही थीं। उन्हींमेंसे एकने लेटते समय गप्पीका सिर अपने हाथमें झेल लिया था। गप्पी राजा उन्हें देखकर बड़ा चकराया। उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया कि ये सब कौन हैं और कहांसे आए हैं। वह भौंचक्का-सा उनकी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टिसे देखने लगा।

"क्या तुम यहींके रहने वाले हो?" उनमेंस एकने धमकाने जैसी आवाजमें गप्पीसे पूछा।

"मैं यहांका राजा हूं!" गप्पीने अकड़ते हुए उत्तर दिया। यद्यपि वह मन ही मन उनसे डर भी रहा था। गप्पी राजाके विचारसे वे कोई जादूगर थे, जो उसकी परीक्षा लेने वहां आ गए थे।

होनहार और हंसमुख बच्चे राष्ट्र की निधि है

जॉली पेंट बाइ नम्बर्स

चित्रकारी को आकर्षक मनोरंजक बनाने वाला उपयोगी खेल जिस में चित्रों वाला रंगों की शीशियों पर दिये हुए नम्बरों की सहायता से बालक चित्र आसानी से बना कर एक आदर्श चित्रकार होने का सुख अनुभव करता है।

मेको

जगत प्रसिद्ध खेल "MECCANO" के आधार पर बनाया गया यह खिलौना बच्चों को इन्जीनियर बनाने में सहायक सिद्ध होता है इस से वे मोटर व अन्य नमूने तैयार किए जा सकते हैं। ७ से ८ तक वर्ष सप्ताहों में बनाया है।

प्लेनो: बच्चों को इन्जीनियर बनाने वाला जगत प्रसिद्ध "MECCANO" का खेल जो अब भारत में ५५ साहबों में बनाया जाता है। ७ से ८ तक के मूल्य दिये हैं शेष जानकारी के लिये लिखें। प्रत्येक बालक के लिये उपयोगी है।
रु० २.२४, ३.२०, ४.००

बच्चे पाठशाला में जितना सीखते है, उससे कितना ही अधिक वे खेल खिलौनों द्वारा प्रसन्नता से ग्रहण कर लेते हैं। 'राय' के खिलौने शिक्षात्मक खिलौने हैं और बच्चों के मनोरञ्जन का हर पहलू उनमें आ जाता है। इसलिए यदि आप अपने बच्चे को पढ़ाना, लिखाना, और प्रसन्न रखना चाहते हैं तो उसे 'राय' के खिलौने ही दीजिए। विशेष जानकारी के लिए ५० पैसे (डाक टिकटें) डाक खर्च भेज कर हमारा सचित्र ५० पृष्ठीय विस्तृत सूचीपत्र मंगायें।

RAI TOYS

राय टायेज

शिक्षात्मक खेलौने

क्रयान कलरिंग कार्ड्स

सुन्दर छपे हुए मजबूत कार्डों के स्टेनसिल चित्र बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। प्रारम्भिक चित्रकला के लिए आवश्यक उपयोगी है। ५ से ८ वर्ष तक के बच्चों के लिए। ५.४७

एजूकेटिव बिल्डर

यह शिक्षाप्रद खिलौना बच्चों को तरह-तरह के नमूने बनाने में सहायक सिद्ध होता है। इसके सब भाग लकड़ी के बनाए गए हैं। ६.२

इलेक्ट्रिक ब्रेनो

यह छोटे बच्चों को इसे पसन्द करते हैं। क्योंकि यह हरएक को अनुभव नई २ बातें बताता है। सवाल-जवाब इस प्रकार लगाये गये हैं कि यदि सही स्थान पर पिन लगाया जायेगा तो बल्ब तुरन्त जल कर उत्तर के सही होने का प्रमाण देगा। ८ वर्षों में बनता है। मो० ३००, ६००, ६०० के मूल्य दिए गए हैं। शेष जानकारी के लिये लिखें।
३.२०, ३.४०, ३.५४

इसे काटिए और हमें नीचे लिखे पते पर भेजिए। हमारी "कूपन प्राफिट स्कीम" में शामिल होकर प्रति तीन खिलौनों पर एक रुपया बचाइये। ऊपर लिखे मूल्य में डाक खर्च व पैकिंग सम्मिलित है। खिलौने मनीआर्डर द्वारा मँगवाएं।

नाम ..... उम्र ..... खिलौना का नाम .....

पता .....

हस्ताक्षर संरक्षक ..... (पृथक प्रतियां पत्र पर भी भेज सकते हैं)

राय टायेज इण्डस्ट्रीज
बाजार सीताराम, देहली

STERLING - 293

"राजा?"
स्वरमें कहा। "
हो? यहांके रा
हैं। याद रखो ह
मौतके सिवा
तीखे स्वरमें धी
"मैं झूठ नहं
है। सब मुझे इस
में यहांका राज
मेरी कुछ सहाय
आवाजमें उत्तर
"हूं!" उस
था, अपने सा
देखा और कुछ
के न समझमें अ
तब सरदारने उ
तुम राजा बनना
हम तुम्हारी सह
इसके बदलेमें ह
"आप मुझे
किसी भी तरह
मुझे कितना भ
राजा उत्सुकता
अपने ऊपर इत
खुश हो रहा था
"कष्ट उठ
तुम हमें पानी
बाहर जानेका
के बदले हम तु
रिचित सरदार
"हम समझ
कारण तुम यहां
चित हो। अगर
दिया, तो ह
बना देंगे। नहं
लाल होते दे
दूसरेने कहा।
गप्पी उन
गया। 'भला ज
रास्ता भूलने
सहायता अपने
सहायता क्या
परीक्षा ही ले

"राजा?" उस आदमीने हंसी उड़ाने वाले स्वरमें कहा। "तुम यहांके राजा कैसे हो सकते हो? यहांके राजाको हम अच्छी तरहसे जानते हैं। याद रखो हमसे झूठ बोलनेका फल तुम्हारी मौतके सिवा और कुछ भी नहीं होगा।" वह तीखे स्वरमें धीरे धीरे कठोर हो गया।

"मैं झूठ नहीं कहता। मेरा नाम 'गप्पी राजा' है। सब मुझे इसी नामसे पुकारते हैं। मैं सचमुच में यहांका राजा बनना चाहता हूं। क्या आप मेरी कुछ सहायता करेंगे?" गप्पीने कांपती हुई आवाजमें उत्तर दिया।

"हूं!" उस अपरिचितने, जो शायद सरदार था, अपने साथियोंकी ओर रहस्यपूर्ण दृष्टिसे देखा और कुछ क्षणों तक उन्होंने गप्पी राजा के न समझमें आने वाली भाषामें कुछ बातें कीं। तब सरदारने उसकी ओर मुड़कर कहा, "तो तुम राजा बनना चाहते हो? ठीक है। इस काममें हम तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। पर तुम्हें भी इसके बदलेमें हमारा एक काम करना होगा।"

"आप मुझे वह काम जल्दी बताइए। मैं किसी भी तरह उसे पूरा करूंगा। चाहे इसमें मुझे कितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े," गप्पी राजा उत्सुकतासे बोला। वह उन जादूगरोंको अपने ऊपर इतनी जल्दी प्रसन्न होते देखकर बहुत खुश हो रहा था।

"कष्ट उठाने जैसी कोई बात नहीं है। बस तुम हमें पानी पिला दो और तब इस जंगलसे बाहर जानेका रास्ता बता दो। इतनी-सी सेवा के बदले हम तुम्हें यहांका राजा बना देंगे," अपरिचित सरदारने कहा।

"हम समझते हैं कि यहांके निवासी होनेके कारण तुम यहांके सभी रास्तोंसे पूरी तरहसे परिचित हो। अगर तुमने हमें इस जंगलसे बाहर कर दिया, तो हम तुम्हें निश्चित ही यहांका राजा बना देंगे। नहीं तो तुम्हारे लहूसे इस मिट्टीको लाल होते देर नहीं लगेगी!" अपरिचितोंमेंसे दूसरेने कहा।

गप्पी उनकी बातें सुनकर विचारमें पड़ गया। 'भला जादूगरोंको प्यासका कष्ट क्यों और रास्ता भूलनेका क्या मतलब! जो अपनी ही सहायता अपने आप नहीं कर सकते, वे भला मेरी सहायता क्या खाक करेंगे! या ये केवल मेरी परीक्षा ही ले रहे हैं।'—यह सोचकर गप्पीने उनसे दृढ़तासे पूछा, "आप निश्चित रहें। मैं आपको पानी भी पिला दूंगा और रास्ता भी बता दूंगा। पर आप भी इतना समझा दीजिए कि इसके पश्चात् मुझे यहांका राजा आप किस प्रकारसे बनाएंगे?"

"अरे लड़के! इसमें मुश्किलकी बात क्या है। इस जंगलमें हम भटक गए हैं। इससे गुप्त सूचना नहीं भेज पाए। यहांसे बाहर होते ही हम यहांसे प्राप्त की हुई महत्वपूर्ण सूचनाएं पाकिस्तान भेजेंगे। सूचनाएं मिलते ही हमारे जवान यहांपर आक्रमण करेंगे। वे सब बाड़मेरमें इस प्रकार सरलतासे घुस जाएंगे जैसे मक्खनमें छुरी। कुछ ही घंटोंमें यहांपर राष्ट्रपति अय्यूबखां का अधिकार हो जाएगा। तब हम तुम्हारी सिफारिश उनसे कर देंगे और वे यह जमीनका टुकड़ा तुम्हें दे कर यहांका राजा बना देंगे," सरदारने गर्वसे तनते हुए कहा।

गप्पी राजाकी आंखोंके सामनेसे जैसे परदा हट गया। 'तो ये लोग पाकिस्तानी घुसपैठिए हैं, जादूगर या देव नहीं। दुश्मनके ये जासूस धोखेसे हमारे देशकी महत्वपूर्ण सूचनाएं लेकर लौटना चाहते हैं।' उसकी दृष्टि दूर दूर फैली हुई अपनी भेड़ोंपर घूमी। उसके होंठ दृढ़तासे भिच गए। उसकी निश्चिंत घूमती हुई प्रजापर अत्याचार करनेकी इच्छासे आए हुए ये लुटेरे! 'क्या मैं इन्हें रास्ता बता दूं? नहीं नहीं, मैं यहांका राजा हूं। यह टीला मेरा सोनेका राज-महल है। भेड़ें मेरी प्रजा हैं!'

"क्या सोचता है, लड़के? जल्दी कर, प्याससे हमारा गला सूखा जा रहा है। उधर हमारे जवान हमारी सूचनाओंकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। जल्दी कर। नहीं तो राजा बननेके स्थानपर अभी इस तलवारकी भेंट हो जाएगा!" सरदारके गर्जदार स्वरने उसका ध्यान भंग किया।

"मुझे मारनेसे अगर आप लोगोंका कुछ भला होता हो, तो मुझे अवश्य मार डालो। मैं तो यह सोच रहा था कि क्या आप सच बोल रहे हैं। क्या मैं आपको अपने भेदकी बात बता दूं?" गप्पी राजाकी गप्प मारनेकी आदत अब जगन लगी।

"हम बिल्कुल सच बोल रहे हैं। यह देखो हमारे पाकिस्तानी जासूस होनेका प्रमाण। अब

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

जलदानव व्हेल

— श्रीकृष्ण

व्हेल समुद्रका ही नहीं, दुनियाका सबसे बड़ा जीव है। डीलडौलमें वह किसी दानवसे कम नहीं होता। वह सौ फुट तक लंबा होता है। केवल सौ फुट कह देनेसे सही कल्पना शायद तुम न कर पाओगे। आम तौरपर हमारे मकानों-का बड़े-से-बड़ा कमरा बीस फुट लंबा होता है। ऐसे पांच कमरे एक कतारमें खड़े करो, तो यह व्हेलकी लंबाई हुई। इसके बदनका घेरा लगभग चालीस फुट होता है। अगर व्हेलको दुमके बल खड़ा किया जाए, तो दो कमरों जितना मोटा उसका शरीर पांच मंजिलकी इमारत जितना ऊंचा होगा।

अब जरा इसका वजन भी सुन लो। इसका वजन होता है सवा लाख किलोग्राम तक अर्थात् बड़ेसे बड़े हाथीका भी तीस गुना।

व्हेलके मुंह जैसा भयानक दृश्य तो दुनियामें तुम्हें शायद और कहीं देखनेको नहीं मिले। इसकी विशालताका अनुमान तुम इसी बातसे लगा सकते हो कि इसके खुले मुंहमें एक छोटी नाव अपने सवारों सहित मजेमें समा सकती है। इसके मुंहमें दो आदमी एकके ऊपर एक करके खड़े हो सकते हैं और १२ फुट ऊंचा एक जानवर बड़े मजेसे भीतर जा सकता है। तुम्हें पता होना चाहिए कि जमीनका सबसे बड़ा जानवर हाथी १०–११ फुटसे ज्यादा ऊंचा नहीं होता।

अगर तुमसे व्हेलके बारेमें कुछ पंक्तियां लिखनेको कहा जाए, तो शायद तुम सबसे पहली पंक्ति यही लिखो कि व्हेल दुनियाकी सबसे बड़ी मछली होती है। लेकिन तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मछलियोंकी तरह शरीरका बाहरी आकार-प्रकार होनेपर भी व्हेल मछली नहीं होती। व्हेल और मछलीमें उतना ही अंतर है, जितना हम-तुम और मछलीमें। हमारी-तुम्हारी तरह व्हेलके फेफड़े होते हैं जबकि मछली-के नहीं होते। व्हेल ठीक हमारी तरह सांस लेता है, सांस लेनेके लिए उसे बार बार पानीसे बाहर अपना सिर निकालकर हवासे ऑक्सीजन लेनी पड़ती है, नहीं तो वह भी उसी तरह पानीमें दम घुटकर मर जाए, जिस तरह हम लोग ज्यादा देर तक पानीके भीतर रहनेसे मर जाते हैं। फेफड़ों-में एक बार सांस भरकर व्हेल आधा घंटे तक पानीमें डूबा रह सकता है। इसके नथुने पानीके भीतर इस तरह बंद हो जाते हैं कि उनके भीतर पानी नहीं समा सकता। सोचो तो, अगर ऐसा इंतजाम न होता, तो क्या होता? इन छेदोंसे पानी व्हेलके फेफड़ेमें पहुंच जाता और वह फौरन डूब जाता।

व्हेल हमारी तरह गर्म खूनका जीव है, जबकि मछलीका खून ठंडा होता है। और एक जो सबसे बड़ा अंतर है वह यह कि व्हेल स्तनपायी जीव है। स्तनपायी वह कहलाता है जो बच्चे जनता है और उन्हें अपने स्तनोंसे दूध पिलाता है। लेकिन सभी मछलियां अंडे देती हैं और उनके स्तन भी नहीं होते।

व्हेल हवासे ऑक्सीजन जरूर लेता है, पर यदि उसे पानीसे बाहर निकाल दिया जाए, तो वह मछलीकी ही तरह मर जाता है। मछली तो इसलिए मरती है कि वह हवासे ऑक्सीजन नहीं ले सकती, पर व्हेल इसलिए मर जाता है क्योंकि उसका शरीर बहुत कोमल होता है। जमीनपर रखे जाते ही वह अपने शरीरके बोझसे आप ही दब जाता है और उसका दम घुट जाता है।

व्हेलकी आं
भागमें होती हैं
छोटी होती हैं। य
ओर नहीं देख सक
उधर अपना पूरा श
की गर्दन भी नहीं
उधर देख सके। इस
की चिकनी पर्त च
आसानीसे खुल सकें
लेकिन इतना

४–लिफाफे
५–रेडियो
६–एकांकी
अन्य भाषाओंमें
७–प्रत्येक
का पूरा पता,
एकांकी प्रतियोगि
८–जिन ए
जाएंगे, उनकी
संपादकको शीर्ष
९–अस्वीकृ
लगा लिफाफा
१०–पांडु
चाहिए। कृपया
११–समस्त
विजेताओंके नाम
का पत्र-व्यवहार
१२–पुरस्कृ
राइट लेखक का

मछलीके समान ह
और अपने शरी
तुम शायद आश्च
कि अक्सर मादा
सतहपर लाकर
खिलाती है। सोचो
और कैसा अनोखा
बड़ा व्हेल अचान
होगा और फिर
वापसीमें जब इ
टकराता है, तो ब
तोप दगनेकी आव
और समुद्रमें बहुत
व्हेलके शरी
बहुत मोटा चमड़ा

द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार २५० रु., दूसरा पुरस्कार १५० रु., तीसरा पुरस्कार १०० रु.

हिन्दीमें बाल-एकांकियोंका बहुत अभाव है। स्कूल-कालिजोंके बच्चोंको अपने वार्षिक समारोहमें मंच पर खेलनेके लिए सुंदर एकांकी प्रायः नहीं मिलते। इस अभावको दूर करनेके लिए 'पराग' की ओरसे यह दूसरी बाल-एकांकी प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगी लेखकोंके लिए निम्नलिखित नियमोंका पालन आवश्यक माना जाएगा :

१–एकांकी मंचपर खेलने योग्य हों तथा पांचसे दस मिनिटमें समाप्त हो सकें।

२–विनोदपूर्ण एकांकियोंको तरजीह दी जाएगी। एकांकीमें किसी प्रकारका नैराश्य-भाव न हो। उन्हें एक सेटपर बिना बहुत अधिक सामान जुटाए खेला जा सके।

३–पात्रोंकी वेशभूषाओं, विशेषताओं आदिका क्रमबद्ध परिचय अलग कागजपर आना चाहिए, जिनके आधारपर उनके चित्र बन सकें। निर्देशक, मंच-व्यवस्थापक, सूत्रधार तथा लाइट-मैन आदिके लिए क्रमबद्ध निर्देश भी एक अलग कागजपर होने चाहिएं।

४–लिफाफेके ऊपर बाएं कोने पर 'द्वितीय पराग बाल-एकांकी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए।

५–रेडियो अथवा ध्वनि-एकांकी कृपया न भेजें।

६–एकांकी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होने चाहिएं। अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओंमें उपलब्ध एकांकियोंके आधारपर आने वाले एकांकी स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

७–प्रत्येक एकांकीकी पांडुलिपिके ऊपर एक कोरा कागज अलगसे लगा होना चाहिए, जिसपर लेखक का पूरा पता, एकांकीका शीर्षक, भेजनेकी तिथि आदि दर्ज हों। ऊपर बाएं कोनेपर 'द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए। पांडुलिपिके अंतमें भी लेखकका पूरा पता होना चाहिए।

८–जिन एकांकियोंपर पुरस्कार नहीं दिया जा सकेगा, किंतु जो 'पराग' में प्रकाशित करने योग्य समझे जाएंगे, उनकी सूचना अलगसे लेखकोंको दे दी जाएगी तथा उनपर नियमानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा। संपादकको शीर्षक बदलनेका अधिकार होगा।

९–अस्वीकृत एकांकियोंको उसी दशामें वापस किया जाएगा, जबकि प्रेषकका पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा।

१०–पांडुलिपि कागजकी एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरोंमें लिखी अथवा टाइप की हुई होनी चाहिए। कृपया टाइपकी मूल प्रति ही भेजनेका कष्ट करें।

११–समस्त पांडुलिपियां हमें अधिकसे अधिक १८ मई १९६६ तक मिल जानी चाहिएं। पुरस्कार-विजेताओंके नाम 'पराग' के अगस्त १९६६ के अंकमें प्रकाशित होंगे। इस प्रतियोगिताके संबंधमें किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। अतः पांडुलिपिके साथ कोई पत्रादि न रखें।

१२–पुरस्कृत व स्वीकृत एकांकियों का प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग' का होगा। इसके बाद कापीराइट लेखक का रहेगा। तदनुसार मंच आदि पर खेलनेकी अनुमति देनेका अधिकार भी उन्हें ही होगा।

१३–एकांकी इस पतेपर भेजे जाएं—**संपादक 'पराग' (द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता)**, पोस्ट बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इण्डिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

छोटी मछलियां, घोंघे और कीड़े-मकोड़े खाकर ही जीना पड़ता है। प्रकृतिने जहां इसे गुफा-जितना लंबा-चौड़ा मुंह दिया है, वहां इसके गलेकी नली संकरी और तंग बनाई है।

व्हेलके मुंहमें प्रायः दांत नहीं होते, लेकिन इसकी कमी प्रकृतिने इन्हें कांटोंका झाड़ देकर पूरी कर दी है। इसके तालूमें हड्डियोंकी बड़ी मोटी मोटी और मजबूत प्लेटें लगी होती हैं। इन्हीं प्लेटोंसे सैकड़ोंकी संख्यामें महीन, लेकिन कठोर कांटे-से लटके रहते हैं।

कांटोंके इस झाड़का वजन ही ४०–५० मन के करीब होता है। जब इसका खानेका मन होता है, यह अपना गुफा जैसा भयंकर मुंह फाड़कर पानीमें, जिधर छोटी छोटी मछलियां, घोंघे या कीड़े-मकोड़े बहुतायतमें होते हैं, आंधीके-से वेगसे उधर बढ़ता है। जब मुंहमें बहुत-सी मछलियां और घोंघे भर जाते हैं; तो यह एकदम अपना मुंह बंद कर लेता है। मुंह बंद करनेसे तालूसे लटकता हुआ कांटोंका झाड़ गिरकर शिकारके बाहर निकलनेका रास्ता बंद कर देता है, लेकिन पानी निकल जाता है। धीरे धीरे करके वह इन्हें निगल जाता है। व्हेलकी जीभ आठ गज लंबी होती है।

पांव से पंखों तक

—हरिकृष्ण देवसरे

(आदमी कभी पांवसे चलता था, अब पंखोंसे उड़ता है। लेकिन यह कैसे संभव हुआ? इसीकी दिलचस्प कहानीकी तीसरी किस्त तुमने पिछले अंकमें पढ़ी थी। लो, अब अंतिम पढ़ो। —संपादक)

(४)

चुन्नू अभी ऊपर ही देखे जा रहा था। नजदीक उड़ता हुआ हवाई जहाज उसे बहुत सुंदर लगा था। वह सोच रहा था लोग कैसे इतने ऊंचे उड़ते होंगे! इतनी ऊंचाईसे नीचेकी धरती, मकान, पेड़ आदि कैसे दिखते होंगे? हवामें तैरनेमें बड़ा मजा आता होगा? अजीब अजीब कल्पनाएं उठ रही थीं उसके मनमें।

चंदन इस बातको अच्छी तरह समझ रहा था कि चुन्नू इस समय हवाई जहाजोंकी दुनियामें खोया है। वह धीरेसे बोला, "पुराना जमाना भी क्या अनोखा था! लोग पुष्पक विमानमें बैठकर उड़ा करते थे।"

"भैया, वे जरूर उड़ना जानते रहे होंगे?" तपाकसे चुन्नू बोला।

"हां, जरूर कोई ऐसी ही मशीन रही होगी। लेकिन जब तक आदमीने उड़ना नहीं जाना, तब तक वे सब बातें एक रहस्य थीं। अब तो लोग 'फ्लाइंग क्लब' में जाकर हवाई उड़ान सीखते हैं। अपना दोस्त रायजादा तो अक्सर वहां जाता है।"

"यह फ्लाइंग क्लब क्या होता है?" चुन्नूने पूछा।

"जहां लोग शौकके लिए हवाई जहाज चलाना और उसमें उड़ना सीखते हैं।"

"तो उनके पास हम लोग कब चलेंगे?" चुन्नूने कुछ इस तरह खुश होकर पूछा जैसे डूबतेको तिनकेका सहारा मिल गया हो।

"चलेंगे किसी दिन। तब तुम्हें हवाई जहाज में बैठाकर सैर कराएंगे," चंदनके इस आश्वासन ने चुन्नूकी खुशी दुगुनी कर दी।

चंदन और चुन्नू अपने एक संबंधीके यहां रहते थे। रिक्शा वहीं पहुंचा। चुन्नू जल्दीसे हाथ-मुंह धोकर तैयार हो गया। चंदनने देखा, तो उसे चुन्नूके उतावलेपनपर हंसी आ गई। फिर उसने बड़े प्यारसे समझाया, "अभी नहीं, शामको चलेंगे। क्लब तो शामको खुलता है।"

लेकिन चुन्नूका मन तो आकाशमें ही सैर कर रहा था। किसी तरह दोपहर बीती और वह फिर कपड़े बदलकर तैयार हो गया। चंदन उस समय कोई किताब पढ़ रहा था। उसने चुन्नू को तैयार देखा, तो अपने पास बुला लिया। वह बोला, "चुन्नू, जिस तरह आकाशमें उड़नेके लिए तुम बेचैन हो, इसी तरह एक जमानेमें हवाई जहाजका आविष्कार करने वाला आदमी सोचा करता था।

"अमरीकामें विलबर राइट नामक ११ वर्ष के एक लड़केको बचपनसे ही उड़नेकी धुन सवार थी। उसका छोटा भाई आरविल राइट, जो सात सालका था, उसके साथ ही रहा करता था। इन राइट बंधुओंको उड़नेकी धुन इतनी जबरदस्त थी कि लोग उनकी बातें सुनकर हंसा करते थे। उन्होंने एक बार उड़नेकी कोशिश भी की थी, पर सफलता नहीं मिली। इसलिए लोग उनपर हंसते। लेकिन राइट बंधु हिम्मत नहीं हारे। उन्होंने थोड़े दिन उड़ान नहीं की, सिर्फ उड़ने वाली मशीन बनानेकी बात सोचते रहे। उनके मनमें यह विश्वास था कि वे एक न एक दिन अवश्य उड़ेंगे।"

चुन्नूको लगा कि यह बात शायद ठीक वैसी ही है, जो वह सोच रहा है। चुन्नू भी तो उड़ना चाहता है। सवेरेसे ही वह तैयार बैठा है।

चंदनने कहानी आगे बढ़ाई: "लगातार बीस

सालों तक राइट
उन्हें इसी बीच यह
एक इंजीनियर इस
और उसकी मृत्यु हो
अपना काम वहींसे
इंजीनियरने खत्म
सबसे पहले एक
जिससे उड़न-मशीन
इस काममें लोगोंक
भी मदद देनेके लि
वे शहर छोड़कर
लगे। वहां उन्होंने

"राइट बंधु
जहाज बनाया, व
वह हवामें ५९ मि
उनका उत्साह बढ़
रखे और थोड़े
सफर करने वाला
हो गया।

"धीरे धीरे
आज तुम बढ़िया
सकते हो।"

सालों तक राइट भाई यह प्रयत्न करते रहे। उन्हें इसी बीच यह मालूम हुआ कि जर्मनीका एक इंजीनियर इस काममें असफल हो गया था और उसकी मृत्यु हो गई। अतः राइट बंधुओंने अपना काम वहींसे शुरू किया, जहां उस जर्मन इंजीनियरने खत्म किया था। उन्होंने सोचा कि सबसे पहले एक ऐसा इंजन बनाना चाहिए, जिससे उड़न-मशीन चल सके। पहले उन्होंने इस काममें लोगोंकी सहायता मांगी, लेकिन कोई भी मदद देनेके लिए तैयार न हुआ। इसलिए वे शहर छोड़कर समुद्रके किनारे आकर रहने लगे। वहां उन्होंने अपना काम शुरू किया।

"राइट बंधुओंने जो सबसे पहला हवाई जहाज बनाया, वह बिलकुल चील जैसा था। वह हवामें ५९ मिनिट तक ही उड़ सका। इससे उनका उत्साह बढ़ा। उन्होंने अपने प्रयत्न जारी रखे और थोड़े ही दिनोंमें २४ मील तकका सफर करने वाला हवाई जहाज बनकर तैयार हो गया।

"धीरे धीरे इसमें उन्नति होती गई और आज तुम बढ़ियासे बढ़िया हवाई जहाज देख सकते हो।"

चुन्नूको इन बातोंमें इतना मजा आया कि वह थोड़ी देरके लिए क्लब जाने वाली बात भूल-सा गया।

पांच बज गए थे। चंदन उठा और हाथ-मुंह धोकर क्लब जानेके लिए तैयार हुआ। चुन्नू सोच रहा था कि अगर एक छोटा हवाई जहाज उसके पास होता, तो वह पलभरमें उड़कर क्लब पहुंच जाता। लेकिन अभी तो रिक्शेपर ही बैठकर वे हवाई अड्डेपर पहुंचे।

वहां उसी समय एक डाक-विमान आया हुआ था। उसमें मुसाफिर भी आए थे। रायजादा ने कहा कि इसे चला जाने दो, फिर तुम्हें सैर कराऊंगा। तब तक तुम इसे ही देख लो।

चुन्नूको आज पहली बार मालूम हुआ कि हवाई जहाजसे डाक भी आती-जाती है। हवाई जहाज काफी बड़ा था। अंदर बैठने-सोनेके लिए विशेष प्रकारकी कुर्सियां लगी थीं। खाने-पीने आदिकी सभी सुविधाएं थीं। एक अलग कमरा मनोरंजनके लिए था। उस हवाई जहाजको ज्यादा देर नहीं रुकना था, इसलिए वे लोग उसे जल्दी ही देखकर बाहर आ गए।

थोड़ी देर बाद वह उड़ा और आकाशकी